PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 073
दि. 12.07.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

महिलाओं की शादी की उम्र पर मौलाना के बयान से छिड़ा विवाद

आयोग, सामाजिक संगठनों और राजनीतिक दलों ने जताई कड़ी आपत्ति

नई दिल्ली। ऑल इंडिया इमाम एसोसिएशन के अध्यक्ष मौलाना साजिद रशीदी महिलाओं की शादी की उम्र और यौन अपराधों को लेकर दिए गए अपने बयान के बाद विवादों के केंद्र में आ गए हैं। उनके बयान पर राष्ट्रीय स्तर पर तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग, विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने इसे महिलाओं के प्रति अनुचित और गलत संदेश देने वाला बताते हुए कड़ी आपत्ति दर्ज कराई है। बढ़ते विवाद के बीच मौलाना साजिद रशीदी ने सफाई देते हुए कहा है कि उनके बयान का गलत अर्थ निकाला गया है और उसे राजनीतिक रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

विवाद की शुरुआत उस समय हुई जब एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान मौलाना साजिद रशीदी ने कहा कि समाज में देर से होने वाले विवाह भी दुष्कर्म जैसी घटनाओं के बढ़ने का एक कारण हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यदि माता-पिता अपनी बेटियों की सुरक्षा चाहते हैं तो उनकी शादी समय पर कर देनी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान दिए गए इस बयान का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से प्रसारित हुआ, जिसके बाद इसे लेकर व्यापक बहस शुरू हो गई। कई लोगों ने इस टिप्पणी को महिलाओं के प्रति संवेदनहीन बताते हुए इसकी आलोचना की, जबकि कुछ लोगों ने इसे सामाजिक मुद्दे पर उनकी व्यक्तिगत राय बताया।

मौलाना के बयान पर सबसे तीखी प्रतिक्रिया उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष बबिता चौहान की ओर से आई। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की टिप्पणी महिलाओं के प्रति संकीर्ण और महिला विरोधी सोच को दर्शाती है। उनके अनुसार आज की भारतीय महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, सेना, खेल, न्यायपालिका, उद्योग और राजनीति सहित लगभग हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का परिचय दे रही हैं। ऐसे समय में महिलाओं

की सुरक्षा को उनकी शादी की उम्र से जोड़ना न केवल उनकी उपलब्धियों को कमतर आंकना है, बल्कि समाज में गलत संदेश भी देता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों की जिम्मेदारी अपराधी की होती है, न कि पीड़िता की उम्र, जीवनशैली या वैवाहिक स्थिति की।

विश्व हिंदू परिषद ने भी मौलाना के बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। संगठन के प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि भारत का संविधान महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार प्रदान करता है तथा महिलाओं की गरिमा और स्वतंत्रता का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। उन्होंने बयान को कट्टर और संकीर्ण मानसिकता का परिचायक बताते हुए कहा कि इस प्रकार की टिप्पणियां समाज में महिलाओं के प्रति गलत सोच को बढ़ावा दे सकती हैं। उन्होंने मौलाना से सार्वजनिक रूप से महिलाओं से माफी मांगने की मांग की तथा राष्ट्रीय महिला आयोग से मामले का संज्ञान लेकर उचित कार्रवाई करने का आग्रह किया।

राजनीतिक गलियारों में भी इस बयान को लेकर चर्चा तेज हो गई है। विभिन्न दलों के नेताओं ने महिलाओं के अधिकारों और सुरक्षा को लेकर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दी हैं। कई नेताओं का कहना है कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों को किसी सामाजिक परंपरा या विवाह की उम्र से जोड़ना उचित नहीं है। उनका तर्क है कि दुष्कर्म जैसे अपराध कानून, सामाजिक जागरूकता और अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई से नियंत्रित किए जा सकते हैं, न कि महिलाओं के जीवन संबंधी निर्णयों को सीमित करके।

बढ़ते विवाद के बाद मौलाना साजिद रशीदी ने मीडिया के सामने अपनी सफाई पेश की। उन्होंने कहा कि उनके बयान को संदर्भ से अलग करके प्रस्तुत किया गया है। उनके अनुसार उनका उद्देश्य किसी महिला का अपमान करना या महिलाओं के अधिकारों पर सवाल उठाना नहीं था, बल्कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों और कुछ कानूनी पहलुओं पर चर्चा करना था। उन्होंने दावा किया कि उनके वक्तव्य को राजनीतिक विवाद का रूप दे दिया गया है, जबकि उनका आशय सामाजिक चिंताओं की ओर ध्यान आकर्षित करना था।

मौलाना ने अपनी सफाई में यह भी कहा कि दुनिया के कई देशों में विवाह और पारिवारिक संबंधों को लेकर अलग-अलग प्रकार के कानून लागू हैं। उनका कहना था कि उन्होंने उन्हीं सामाजिक और कानूनी परिवर्तनों का उल्लेख करते हुए अपनी बात रखी थी। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी धर्म, समाज या व्यवस्था में कोई सकारात्मक बात है, तो उसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। हालांकि उनके इस स्पष्टीकरण के बाद भी विवाद थमता नजर नहीं आ रहा है और विभिन्न संगठनों की ओर से लगातार प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं।

अपने पक्ष को स्पष्ट करते हुए मौलाना ने बाल विवाह का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि देश के कई राज्यों में आज भी कम उम्र में विवाह की घटनाएं सामने आती हैं। उन्होंने असम, बिहार, झारखंड, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि कई क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक कारणों से परिवार कम उम्र में बेटियों की शादी कर देते हैं। उन्होंने कहा कि इस्लाम में भी विवाह को लेकर परिपक्वता और बालिग होने का सिद्धांत बताया गया है तथा उनके बयान को इस संदर्भ से अलग करके प्रस्तुत किया गया है।

हालांकि महिला अधिकार कार्यकर्ताओं और सामाजिक संगठनों का कहना है कि विवाह की उम्र और यौन अपराधों के बीच सीधा संबंध स्थापित करना उचित नहीं है। उनका तर्क है कि दुष्कर्म जैसे अपराध सत्ता के दुरुपयोग, आपराधिक मानसिकता, कानून के भय की कमी और सामाजिक विकृतियों का परिणाम होते हैं। ऐसे मामलों में महिलाओं के विवाह या व्यक्तिगत जीवन को कारण के रूप में प्रस्तुत करना पीड़ितों के प्रति असंवेदनशील दृष्टिकोण माना जा सकता है। उनका कहना है कि महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कानून, तेज न्यायिक प्रक्रिया, सामाजिक जागरूकता और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना अधिक आवश्यक है।

समंदर में भारत की बढ़ी रणनीतिक ताकत, अत्याधुनिक स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस महेंद्रगिरि से नौसेना को मिला नया सुरक्षा कवच

विशाखापत्तनम। हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी समुद्री शक्ति को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में भारत ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। स्वदेशी रक्षा निर्माण क्षमता का प्रदर्शन करते हुए भारतीय नौसेना ने अत्याधुनिक स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस महेंद्रगिरि को औपचारिक रूप से अपने बेड़े में शामिल कर लिया। शनिवार को विशाखापत्तनम में आयोजित भव्य समारोह में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में इस आधुनिक युद्धपोत का नौसेना में कमीशनिंग किया गया। आईएनएस महेंद्रगिरि के शामिल होने के साथ ही भारतीय नौसेना की समुद्री निगरानी, युद्ध संचालन, पनडुब्बी रोधी क्षमता और बहुआयामी समुद्री अभियानों की ताकत में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है।

आईएनएस महेंद्रगिरि का नौसेना में शामिल होना केवल एक नए युद्धपोत के शामिल होने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता, स्वदेशी तकनीकी क्षमता और आधुनिक युद्धपोत निर्माण में बढ़ती दक्षता का भी प्रतीक माना जा रहा है। यह युद्धपोत 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' अभियान की दिशा में रक्षा क्षेत्र की अब तक की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक माना जा रहा है।

आईएनएस महेंद्रगिरि का निर्माण प्रोजेक्ट-17ए के अंतर्गत किया गया है। यह नीलगिरी श्रेणी का

चौथा स्टील्थ फ्रिगेट है, जिसे भारतीय नौसेना की भविष्य की परिचालन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है। इस परियोजना का मूल डिजाइन भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो (WDB) ने तैयार किया, जबकि विस्तृत इंजीनियरिंग डिजाइन और निर्माण कार्य मुंबई स्थित माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL) ने पूरा किया। पूरे निर्माण कार्य की निगरानी भारतीय नौसेना की वॉरशिप ओवरसीइंग टीम ने की, ताकि गुणवत्ता, सुरक्षा और तकनीकी मानकों का पूरी तरह पालन सुनिश्चित किया जा सके। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार आईएनएस महेंद्रगिरि भारतीय नौसेना के उन आधुनिक युद्धपोतों में शामिल है, जिन्हें भविष्य के समुद्री युद्धों की चुनौतियों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है। जहाज में अत्याधुनिक स्टील्थ तकनीक का उपयोग किया गया है, जिससे दुश्मन के रडार पर इसकी पहचान करना काफी कठिन हो जाता है। कम रडार हस्ताक्षर, आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली और उन्नत सेंसर इसे अत्यधिक प्रभावी युद्धपोत बनाते हैं।

करीब 149 मीटर लंबा और 17.8 मीटर चौड़ा यह युद्धपोत लगभग 6,400 टन विस्थापन क्षमता रखता है। इसमें अत्याधुनिक कंबाइंड डीजल ऑर गैस (CODOG) प्रणोदन प्रणाली लगाई गई है, जो आवश्यकता के अनुसार डीजल इंजन और गैस टरबाइन दोनों का उपयोग कर सकती है। यह प्रणाली युद्धपोत को 28 समुद्री मील से अधिक की अधिकतम गति प्रदान करती है, जिससे यह कम समय में लंबी दूरी तय करने और त्वरित सैन्य कार्रवाई करने में सक्षम बनता है।

आईएनएस महेंद्रगिरि को बहुआयामी युद्ध अभियानों के लिए तैयार किया गया है। यह समुद्र की सतह पर मौजूद युद्धपोतों, हवा में मौजूद खतरों तथा समुद्र के भीतर सक्रिय पनडुब्बियों से एक साथ मुकाबला करने की क्षमता रखता है। जहाज में अत्याधुनिक मिसाइल प्रणाली, आधुनिक नौसैनिक तोपें, टॉरपीडो, उन्नत रडार, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली, एकीकृत संचार नेटवर्क और स्वचालित नियंत्रण प्रणाली स्थापित की गई हैं। इसके अलावा हेलीकॉप्टर संचालन की सुविधा भी इसे समुद्री निगरानी और पनडुब्बी रोधी अभियानों में और अधिक प्रभावी बनाती है।

भारतीय नौसेना के लिए यह युद्धपोत विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। हाल के वर्षों में हिंद महासागर में विभिन्न देशों की बढ़ती सैन्य गतिविधियों और समुद्री सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों को देखते हुए भारत लगातार अपनी नौसैनिक क्षमता का विस्तार कर रहा है। आईएनएस महेंद्रगिरि इस रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जा रहा है। इसके माध्यम से समुद्री सीमाओं की निगरानी, समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, मानवीय सहायता अभियान, आपदा राहत कार्य और समुद्री आतंकवाद से निपटने जैसी जिम्मेदारियों को और अधिक प्रभावी ढंग से निभाया जा सकेगा।

युद्धपोत के निर्माण में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने समयबद्ध निर्माण क्षमता का भी नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। कंपनी के अनुसार नीलगिरी श्रेणी के पहले जहाज की तुलना में आईएनएस महेंद्रगिरि के निर्माण समय में लगभग 21 प्रतिशत की कमी लाई गई। आधुनिक निर्माण तकनीकों, डिजिटल डिजाइन प्रणाली और बेहतर परियोजना प्रबंधन के कारण यह उपलब्धि संभव हो सकी। इससे भारत की रक्षा उत्पादन क्षमता में आई तकनीकी प्रगति भी स्पष्ट होती है।

विधायकों की खरीद-फरोख्त के आरोपों पर जम्मू-कश्मीर में सियासी संग्राम

बीजेपी ने उमर अब्दुल्ला से मांगे सबूत, कानूनी कार्रवाई की दी चेतावनी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर की राजनीति में एक बार फिर आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला द्वारा भारतीय जनता पार्टी पर नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के विधायकों को कथित तौर पर खरीदने की कोशिश करने का आरोप लगाने के बाद प्रदेश का राजनीतिक माहौल गरमा गया है। बीजेपी ने मुख्यमंत्री के आरोपों को पूरी तरह निराधार बताते हुए उन्हें गंभीर चुनौती दी है और कहा है कि यदि उनके पास अपने दावों के समर्थन में ठोस प्रमाण हैं तो वे उन्हें सार्वजनिक करें, अन्यथा सार्वजनिक रूप से माफी मांगें। पार्टी ने यह भी संकेत दिया है कि यदि आरोपों के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया तो कानूनी कार्रवाई का रास्ता अपनाया जा सकता है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के बयान के बाद जम्मू-कश्मीर बीजेपी अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद सत शर्मा ने प्रेस से बातचीत में तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि किसी राज्य के मुख्यमंत्री जैसे संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति से तथ्यों और जिम्मेदारी के साथ बयान देने की अपेक्षा की जाती है। बिना प्रमाण देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी पर इस प्रकार के गंभीर आरोप लगाना न केवल राजनीतिक मर्यादा के विरुद्ध है, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा को भी प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि यदि मुख्यमंत्री अपने आरोपों को सिद्ध नहीं कर पाते हैं तो उन्हें सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए। सत शर्मा ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला अपनी सरकार के प्रदर्शन और चुनाव के दौरान किए गए वादों को लेकर जनता के बीच उठ रहे सवालों से ध्यान हटाने के लिए इस तरह के आरोप लगा रहे हैं। उनके अनुसार वर्तमान सरकार जिन मुद्दों पर जनता से किए गए वादों को पूरा करने में अपेक्षित प्रगति नहीं दिखा पा रही है, उनसे ध्यान भटकाने के उद्देश्य से राजनीतिक विवाद खड़ा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आरोप लगाना आसान है, लेकिन लोकतांत्रिक व्यवस्था में हर आरोप को तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर साबित करना भी उतना ही आवश्यक होता है। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने यह भी कहा कि पार्टी को नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायकों से संपर्क करने या उन्हें अपने पक्ष में लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने दावा किया कि राज्य की मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में बीजेपी अपनी राजनीतिक रणनीति और संगठनात्मक मजबूती के आधार पर कार्य कर रही है। उन्होंने यह सवाल भी उठाया कि जब नेशनल कॉन्फ्रेंस के कुछ विधायक कथित तौर पर अपनी ही सरकार और उपमुख्यमंत्री के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले रहे हैं, तब बीजेपी पर विधायकों को तोड़ने का आरोप लगाना तर्कसंगत नहीं लगता।

विवाद का सबसे चर्चित पहलू वह दावा है जिसमें मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कथित रूप से कहा था कि उनकी पार्टी के कुछ विधायकों को 20 से 30 करोड़ रुपये तक के प्रस्ताव दिए गए। इस दावे को लेकर बीजेपी ने सीधी चुनौती दी है। सत शर्मा ने कहा कि यदि वास्तव में किसी विधायक को इस प्रकार का प्रस्ताव दिया गया है तो मुख्यमंत्री संबंधित विधायकों के नाम सार्वजनिक करें और उपलब्ध साक्ष्यों को जांच एजेंसियों अथवा जनता के सामने रखें। उन्होंने कहा कि केवल राजनीतिक बयान देकर इस प्रकार के गंभीर आरोप लगाना उचित नहीं है।

बीजेपी का कहना है कि यदि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में विधायकों की खरीद-फरोख्त जैसी गंभीर बात सामने आती है तो यह केवल राजनीतिक मुद्दा नहीं, बल्कि कानून और लोकतंत्र से जुड़ा विषय बन जाता है। ऐसे मामलों में आरोप लगाने वाले व्यक्ति का दायित्व होता है कि वह संबंधित एजेंसियों को पूरी जानकारी उपलब्ध कराए ताकि निष्पक्ष जांच हो सके। पार्टी का कहना है कि यदि आरोप सही हैं तो दोषियों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन यदि आरोप निराधार हैं तो राजनीतिक लाभ के लिए इस प्रकार के बयान स्वीकार नहीं किए जा सकते।

सत शर्मा ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मुख्यमंत्री के सामने अब दो ही विकल्प हैं। पहला, वे अपने आरोपों के समर्थन में प्रमाण प्रस्तुत करें और यह स्पष्ट करें कि किन विधायकों से किसने संपर्क किया तथा किस आधार पर धन का प्रस्ताव दिया गया। दूसरा, यदि उनके पास ऐसे कोई प्रमाण नहीं हैं तो उन्हें सार्वजनिक रूप से अपने बयान के लिए खेद व्यक्त करते हुए माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दोनों में से कोई भी कदम नहीं उठाए जाने की स्थिति में बीजेपी कानूनी कार्रवाई करने पर गंभीरता से विचार करेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पार्टी इस पूरे मामले को हल्के में नहीं ले रही है और इस संबंध में बीजेपी की कानूनी टीम से सलाह-मशविरा किया जा रहा है। यदि आवश्यकता हुई तो पार्टी उपलब्ध कानूनी प्रावधानों के तहत उचित कार्रवाई करेगी। उनके अनुसार लोकतांत्रिक राजनीति में राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन बिना साक्ष्य गंभीर आरोप लगाना स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा के अनुकूल नहीं माना जा सकता।

जम्मू-कश्मीर की राजनीति में हाल के वर्षों में दल-बदल, राजनीतिक गठजोड़ और सरकार गठन को लेकर समय-समय पर विभिन्न प्रकार के आरोप सामने आते रहे हैं। ऐसे में मुख्यमंत्री द्वारा लगाए गए इस ताजा आरोप ने राजनीतिक बहस को और तेज कर दिया है। विपक्ष इस मुद्दे को सरकार की विश्वसनीयता से जोड़कर देख रहा है, जबकि सत्तापक्ष का कहना है कि लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए ऐसे मामलों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद केवल आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आने वाले दिनों में यदि कोई औपचारिक शिकायत या कानूनी प्रक्रिया शुरू होती है तो इसका असर जम्मू-कश्मीर की राजनीति पर भी पड़ सकता है।

इंसाफ की आस में दिल्ली पहुंचा भरत तिवारी का परिवार, जंतर-मंतर से शुरू होगी निर्णायक लड़ाई, न्याय मिलने तक आंदोलन जारी रखने का ऐलान

नई दिल्ली। बिहार में कथित पुलिस एनकाउंटर में मारे गए भरत तिवारी मामले ने अब राष्ट्रीय स्तर पर नया मोड़ ले लिया है। घटना के 22 दिन बाद मृतक का परिवार न्याय की मांग लेकर राजधानी दिल्ली पहुंच गया है। परिजनों ने रविवार से जंतर-मंतर पर अनिश्चितकालीन धरना शुरू करने का ऐलान करते हुए स्पष्ट किया है कि जब तक उनकी मांगों पर ठोस कार्रवाई नहीं होती और उन्हें न्याय का भरोसा नहीं मिलता, तब तक उनका आंदोलन जारी रहेगा। परिवार का कहना है कि यह केवल भरत तिवारी के लिए न्याय की लड़ाई नहीं, बल्कि कथित भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग और पुलिस कार्रवाई में पारदर्शिता की मांग का भी आंदोलन होगा। राजधानी पहुंचने के बाद भरत तिवारी के भाई चंदन तिवारी ने प्रेसवार्ता में कहा कि उनका परिवार पिछले तीन सप्ताह से लगातार न्याय की गुहार लगा रहा है, लेकिन अब तक उन्हें संतोषजनक कार्रवाई होती दिखाई नहीं दी। उन्होंने बताया कि उनके माता-पिता भी दिल्ली पहुंच रहे हैं और पूरा परिवार जंतर-मंतर पर धरने में शामिल होगा। चंदन तिवारी ने कहा कि उनका आंदोलन पूरी तरह लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण होगा तथा संविधान में मिले अधिकारों के तहत न्याय की मांग की जाएगी। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि जब तक उनकी मांगों पर उचित निर्णय नहीं लिया जाता, तब तक परिवार धरना स्थल नहीं छोड़ेगा।

परिजनों का कहना है कि इस आंदोलन को विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संगठनों का समर्थन मिल रहा है। उन्होंने दावा किया कि करणी सेना समेत कई अन्य संगठन उनके साथ खड़े हैं और आंदोलन में शामिल होंगे। परिवार का मानना है कि यदि इस मामले में निष्पक्ष जांच और न्याय सुनिश्चित नहीं किया गया तो भविष्य में ऐसे मामलों की पुनरावृत्ति को रोकना मुश्किल होगा।

इसलिए यह संघर्ष केवल एक परिवार का नहीं, बल्कि न्याय व्यवस्था में आम लोगों के विश्वास को मजबूत करने का प्रयास भी है। धरने को प्रतीकात्मक रूप देने के लिए भरत तिवारी के परिजन उस स्थान की मिट्टी भी अपने साथ लेकर दिल्ली पहुंचे हैं, जहां कथित पुलिस मुठभेड़ हुई थी। परिवार का कहना है कि यह मिट्टी उन्हें उस घटना की याद दिलाती रहेगी, जिसने उनके परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया। उनके अनुसार यह केवल मिट्टी नहीं, बल्कि उस दिन की स्मृति और न्याय की उनकी प्रतिज्ञा का प्रतीक है। परिजनों ने कहा कि वे इस मिट्टी को आंदोलन स्थल पर रखेंगे ताकि हर आने वाला व्यक्ति यह समझ सके कि उनका संघर्ष किस दर्द और किन परिस्थितियों से जुड़ा हुआ है।

इस बीच भरत तिवारी एनकाउंटर मामले की न्यायिक जांच भी जारी है। राज्य सरकार द्वारा गठित न्यायिक जांच आयोग मामले के विभिन्न पहलुओं की पड़ताल कर रहा है। आयोग के निर्देश पर जगदीशपुर के एसडीपीओ पंकज कुमार मिश्रा ने छह महत्वपूर्ण गवाहों को समन जारी किया है। इनमें चार गवाह बिलौटी गांव और दो गवाह जवइनिया गांव के निवासी बताए गए हैं। आयोग ने सभी गवाहों को निर्धारित तिथि पर उपस्थित होकर घटना से संबंधित जानकारी और अपना पक्ष रखने के निर्देश दिए हैं। माना जा रहा है कि इन गवाहों के बयान जांच की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

शनिवार को न्यायिक जांच आयोग के समक्ष भरत तिवारी के माता-पिता ने उपस्थित होकर अपना पक्ष रखा। उन्होंने आयोग के सामने घटना से जुड़े तथ्यों, पुलिस कार्रवाई और अपने संदेहों को विस्तार से रखा। हालांकि आयोग की ओर से समन जारी किए जाने के बावजूद भरत तिवारी के भाई और भाभी उस दिन गवाही देने नहीं पहुंचे। इसे लेकर आयोग आगे की प्रक्रिया के तहत आवश्यक निर्णय ले सकता है। जांच एजेंसियां अब सभी पक्षों के बयान, उपलब्ध दस्तावेजों और अन्य साक्ष्यों के आधार पर घटनाक्रम की विस्तृत समीक्षा कर रही हैं।

गौरतलब है कि 17 जून को बिहार के बिलौटी गांव निवासी भरत तिवारी कथित पुलिस मुठभेड़ में गंभीर रूप से घायल हो गए थे। बाद में उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। घटना के बाद पुलिस की कार्रवाई को लेकर कई सवाल उठे और मामला तेजी से राजनीतिक तथा सामाजिक चर्चा का विषय बन गया। मृतक के परिजनों ने शुरू से ही पुलिस कार्रवाई पर गंभीर सवाल खड़े करते हुए निष्पक्ष जांच की मांग की। वहीं विभिन्न सामाजिक संगठनों ने भी मामले की स्वतंत्र जांच कराने की मांग उठाई।

बढ़ते विवाद और जनदबाव के बीच बिहार सरकार ने मामले की न्यायिक जांच कराने का निर्णय लिया। इसके लिए पटना हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश जस्टिस विनोद कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में एक सदस्यीय न्यायिक जांच आयोग का गठन किया गया। आयोग को घटना की परिस्थितियों, पुलिस कार्रवाई की वैधता, उपलब्ध साक्ष्यों और सभी संबंधित पक्षों के बयानों की जांच कर अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपने की जिम्मेदारी दी गई है।

आयोग का कार्यालय आरा स्थित डीपीआरसी भवन में स्थापित किया गया है, जहां नियमित रूप से मामले की सुनवाई की जा रही है। आयोग अब तक कई अधिकारियों, प्रत्यक्षदर्शियों और संबंधित व्यक्तियों के बयान दर्ज कर चुका है। जांच प्रक्रिया के दौरान घटनास्थल से जुड़े तथ्यों, चिकित्सीय रिपोर्ट, पुलिस रिकॉर्ड और अन्य दस्तावेजों की भी समीक्षा की जा रही है। सूत्रों के अनुसार आयोग सभी पहलुओं की निष्पक्ष जांच कर तथ्यों के आधार पर अपनी रिपोर्ट तैयार करेगा।

दिल्ली में प्रस्तावित धरने को लेकर भी राजनीतिक और सामाजिक हलकों की नजर बनी हुई है। जंतर-मंतर लंबे समय से देशभर के विभिन्न आंदोलनों और जनसरोकारों का प्रमुख केंद्र रहा है। ऐसे में भरत तिवारी के परिवार का राजधानी में आंदोलन शुरू करने का फैसला इस मामले को राष्ट्रीय स्तर पर नई चर्चा दे सकता है। परिवार को उम्मीद है कि दिल्ली में उनकी आवाज अधिक प्रभावी ढंग से उठेगी और केंद्र तथा राज्य स्तर पर जिम्मेदार संस्थाओं का ध्यान इस मामले की ओर जाएगा।

परिवार ने स्पष्ट किया है कि उनका उद्देश्य किसी राजनीतिक विवाद को जन्म देना नहीं, बल्कि निष्पक्ष न्याय सुनिश्चित कराना है। उन्होंने कहा कि वे संविधान और कानून पर पूरा विश्वास रखते हैं तथा न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करते हैं। हालांकि उनका मानना है कि जब तक न्याय की प्रक्रिया पूरी नहीं होती और दोषियों की जवाबदेही तय नहीं होती, तब तक उनका संघर्ष जारी रहेगा। अब सभी की निगाहें एक ओर दिल्ली में शुरू होने वाले धरने पर टिकी हैं तो दूसरी ओर न्यायिक जांच आयोग की कार्यवाही पर भी।

संपादकीय

दवा न बने दारू

सार्वजनिक विमर्श में लंबे समय से मांग की जाती रही है कि ज्यादा अल्कोहल की मात्रा वाली दवाओं का सख्ती से नियमन किया जाए। दरअसल, नशे की लत छुड़ाने के प्रयासों के दौरान इन दवाओं का दुरुपयोग किया जाता रहा है। साथ ही जिन राज्यों में नशाबंदी लागू है, वहां भी उनके गलत इस्तेमाल की शिकायतें मिलती रही हैं। ऐसे में केंद्र सरकार का ज्यादा अल्कोहल की मात्रा वाली पीने वाली दवाइयों व सिरप की बिक्री पर सख्ती करने का फैसला, एक जरूरी सुधार है। निश्चय ही इस कदम से लंबे समय से इन दवाइयों के गलत इस्तेमाल की प्रवृत्ति पर रोक लग सकेगी। दरअसल, 12 प्रतिशत से ज्यादा एथिल अल्कोहल मात्रा के साथ बड़ी बोतल में मिलने वाली दवाइयों के लिये अब लाइसेंस, डॉक्टर की पर्ची और रिकॉर्ड रखने के नियम कड़े करके सरकार ने जरूरी पहल की है। आखिरकार सरकार ने उस सच्चाई को स्वीकार कर लिया है, जिसे रेगुलेटर लंबे समय से नजरअंदाज कर रहे थे। यह हकीकत है कि इन दवाओं का नियमन व निगरानी कायदे की न होने से ये दवाएं नशा करने का जरिया भी बन रही थीं। निश्चित रूप से ये नये नियम मरीजों की दवा तक पहुंच और जन-सुरक्षा के बीच समझदारी भरा संतुलन बनाते हैं। इसका मतलब ये है कि जिन्हें वास्तव में इन दवाइयों की जरूरत है, उन्हें ये दवाइयां डॉक्टर की देखरेख में सहज उपलब्ध हो सकेंगी। वहीं दूसरी ओर इन दवाइयों का दुरुपयोग गलत कार्य के लिये करने वालों की इन तक पहुंच मुश्किल हो जाएगी। निश्चय ही यह वक्त की जरूरत थी क्योंकि किशोर और नशे की लत से जूझ रहे लोग अक्सर ऐसी दवाइयों को शराब के सस्ते विकल्प के तौर पर इस्तेमाल करने लगते हैं। जनमानस में उपचार के लिये आम बोलचाल में प्रचलित शब्द 'दवा-दारू', वास्तव में ऐसे नशेड़ियों के लिये नशे का मौका उपलब्ध कराने का जरिया बन जाता था। इस पर अंकुश लगाना निश्चिय ही स्वागत योग्य कदम है।

दरअसल, एम्स दिल्ली के नेशनल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर ने नशीले पदार्थों की लत छुड़ाने के लिये इलाज करा रहे लोगों के बीच इन दवाइयों व कफ सिरफ आदि के अनुचित इस्तेमाल का पर्याप्त रिकॉर्ड रखा है। इतना ही नहीं, जन स्वास्थ्य से जुड़े कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी इस बाबत चिंता जाहिर कर चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तो बाकायदा चेतावनी दी है कि जिन जगहों पर सामान्य शराब महंगी होती है या नशाबंदी लागू होने से आसानी से उपलब्ध नहीं होती है, वहां अधिक अल्कोहल वाली दवाइयों के दुरुपयोग की लगातार संभावना बनी रहती है। जो इस बात की ओर स्पष्ट संकेत करता है कि जैसे-जैसे नशीले पदार्थों के रूप में दवाइयों का दुरुपयोग बढ़ता है, वैसे-वैसे ही नियमों में बदलाव करना अपरिहार्य हो जाता है। बहरहाल, कागजों पर नियम बना देना तो मात्र एक शुरुआत भर है। सबसे जरूरी है कि इन नियमों को सख्ती से लागू किया जाए। साथ ही निगरानी तंत्र को भी मजबूत बनाने की जरूरत है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि नियमों को तोड़कर दवा के दुरुपयोग की कोशिश करने वालों की निगरानी के लिये ड्रग इंस्पेक्टरों की पर्याप्त संख्या हो। इसके अलावा फार्मेसियों को भी इस बाबत जवाबदेह बनाना जरूरी हो जाता है। जिसके लिये ऐसी दवाइयों की बिक्री के रिकॉर्ड को डिजिटल करना भी आवश्यक है ताकि नियामक तंत्र इनकी बिक्री की निगरानी कर सके। निस्संदेह, डॉक्टरों का भी नैतिक दायित्व है कि वे जरूरतमंद लोगों को ये दवाइयां सोच-समझकर ही लिखें। साथ ही इससे होने वाले खतरों के बारे में भी मरीजों को अवगत कराएं। इन बोतलों पर दवा का लेबल लगाने का अंतिम निष्कर्ष यह नहीं है कि वे पूरी तरह से सुरक्षित हैं। बहरहाल, नियमों में बदलाव सरकार की एक बुनियादी जिम्मेदारी को ही दर्शाता है। जो यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि इलाज के लिए उपयोग होने वाले उत्पादों से लोगों को फायदा ही हो, नुकसान नहीं। निस्संदेह, सरकार ने सही दिशा में कदम उठाया है। अब इस नियम को सख्ती से लागू करने का पक्का इरादा भी दिखाना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो इस रोग का पूरा इलाज नहीं हो पायेगा।

PM Modi New Zealand Australia Indonesia Visit Big Outcomes : 3 देशों से भारत के लिए आखिर क्या लाए मोदी?

> मोदी की न्यूजीलैंड यात्रा इसलिए भी खास रही क्योंकि करीब 40 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने वहां की आधिकारिक यात्रा की। प्रधानमंत्री मोदी का पारंपरिक माओरी रीति से स्वागत किया गया और उसके बाद न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन के साथ लंबी बातचीत हुई।

करीब एक सप्ताह के विदेश दौरे के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब स्वदेश लौट रहे हैं तो ऐसा नहीं लगता कि वह केवल तीन देशों की यात्रा पूरी करके लौटे हैं, बल्कि ऐसा लगता है कि वह दुनिया के सामने नए भारत की ताकत, उसकी बढ़ती हैसियत और उसके उज्ज्वल भविष्य का दमदार परिचय देकर लौटे हैं। हम आपको बता दें कि इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की यात्रा के दौरान मोदी ने तीनों देशों के साथ रक्षा, व्यापार, शिक्षा, ऊर्जा, तकनीक और समुद्री सुरक्षा जैसे कई अहम समझौते किए। साथ ही उन्होंने दुनिया को यह भी बताया कि आज का भारत सिर्फ बातों से नहीं, बल्कि अपनी मिसाइलों की ताकत, आधुनिक तकनीक, मजबूत अर्थव्यवस्था और विकसित भारत के संकल्प के दम पर नई ऊंचाइयों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। साथ ही तीनों देशों में प्रधानमंत्री का जिस गर्मजोशी और भव्य अंदाज में स्वागत हुआ, उसने भारत की बढ़ती साख की साफ तस्वीर पेश की। इतना ही नहीं, जब मोदी ने वहां बसे भारतीय समुदाय को संबोधित किया तो वहां के शीर्ष नेताओं ने भी उनकी लोकप्रियता और भारतीयों के उत्साह को करीब से देखा। इससे एक बार फिर साफ हो गया कि मोदी की पहचान अब केवल भारत के प्रधानमंत्री तक सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के प्रभावशाली नेताओं में उनकी छवि लगातार और मजबूत होती जा रही है।सबसे पहले बात न्यूजीलैंड की। यह यात्रा इसलिए भी खास रही क्योंकि करीब 40 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने वहां की आधिकारिक यात्रा की। प्रधानमंत्री मोदी का पारंपरिक माओरी रीति से स्वागत किया गया और उसके बाद न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन के साथ लंबी बातचीत हुई। इस मुलाकात का सबसे बड़ा फैसला दोनों देशों के रिश्तों को नई रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक पहुंचाना रहा। इसके साथ ही वर्ष 2030 तक दोनों देशों के बीच कारोबार को दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया। दोनों पक्षों ने मुक्त व्यापार समझौते को जल्द लागू करने पर भी सहमति जताई ताकि दोनों देशों के व्यापारियों और उद्योगों को सीधा लाभ मिल सके।

न्यूजीलैंड यात्रा के दौरान रक्षा और समुद्री सुरक्षा पर कई बड़े कदम उठाए गए। दोनों देशों की नौसेनाएं अब जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की रसद सुविधाओं का इस्तेमाल कर सकेंगी। समुद्र से जुड़ी जानकारियां साझा होंगी, संयुक्त अभ्यास बढ़ेंगे और समुद्री सुरक्षा पर हर साल नियमित बातचीत होगी। आतंकवाद के खिलाफ साझा कार्य समूह बनाने का भी फैसला हुआ जिससे दोनों देश जानकारी साझा कर आतंक के खिलाफ मिलकर काम करेंगे।

इसके अलावा भूकंप, सुनामी और दूसरी प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन में सहयोग बढ़ेगा। डेयरी और पशुपालन के क्षेत्र में न्यूजीलैंड की आधुनिक तकनीक भारत तक पहुंचेगी। पर्यटन, खेल, संस्कृति, समुद्री विरासत, खाद्य तकनीक और समुद्री अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में भी कई समझौते हुए। नागालैंड और उत्तराखंड में कीवी फल के लिए दो उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे ताकि किसानों को बेहतर तकनीक और अधिक उत्पादन का लाभ मिल सके। न्यूजीलैंड ने वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन में शामिल होने का भी फैसला किया। अंटार्कटिका अनुसंधान, खाद्य तकनीक और शिक्षा के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच नए सहयोग का रास्ता खुला है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए न्यूजीलैंड ने अपना समर्थन दोहराया और आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई पर भी दोनों देश एकमत दिखाई दिए।

अब बात ऑस्ट्रेलिया की। मेलबर्न में हुई वार्षिक शिखर बैठक के दौरान दोनों देशों ने रक्षा और सुरक्षा सहयोग को नई मजबूती दी। नई संयुक्त रक्षा घोषणा के तहत सेना, नौसेना और वायुसेना के बीच तालमेल बढ़ाने, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद से मुकाबला, नई तकनीक और समुद्री कानूनों के पालन पर साथ काम करने का फैसला हुआ। समुद्री सुरक्षा के लिए अलग कार्ययोजना बनी और दोनों देशों के तटरक्षक बलों के बीच भी नया समझौता हुआ। ऊर्जा के क्षेत्र में दोनों देशों ने साथ मिलकर काम करने का भरोसा दोहराया। लंबे समय से लंबित असैन्य परमाणु समझौते को पूरी तरह लागू करने का रास्ता साफ हुआ, जिससे भारत को ऑस्ट्रेलिया से यूरेनियम की आपूर्ति आसान होगी। नई तकनीक, साइबर सुरक्षा और जरूरी आपूर्ति व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए भी नई साझेदारी बनी।

इतिहास

शिक्षा और कौशल विकास में भी कई महत्वपूर्ण फैसले हुए। खनन क्षेत्र के लिए भुवनेश्वर में उत्कृष्टता केंद्र बनेगा। ऑस्ट्रेलिया के दो प्रमुख विश्वविद्यालय भारत में अपने परिसर खोलेंगे जिससे भारतीय छात्रों को विदेश जाए बिना बेहतर शिक्षा का अवसर मिलेगा। दोनों देशों के कौशल प्रशिक्षण संस्थानों के बीच भी सहयोग बढ़ेगा।

इस यात्रा की एक खास उपलब्धि भारत की प्राचीन धरोहरों की वापसी भी रही। नंदी, भगवान कार्तिकेय और मां काली से जुड़ी तीन दुर्लभ प्राचीन मूर्तियां ऑस्ट्रेलिया ने भारत को लौटाने का फैसला किया। इसके अलावा सौर ऊर्जा, विज्ञान, फिल्म निर्माण, पारंपरिक ज्ञान, खनिज खोज और औषधि अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में भी कई नए समझौते हुए।

प्रधानमंत्री मोदी के इस दौरे की शुरुआत इंडोनेशिया से हुई जहां दोनों देशों ने अपने पुराने रिश्तों को और मजबूत बनाने का फैसला किया। प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो के बीच हुई बातचीत में रक्षा, समुद्री सुरक्षा, व्यापार, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, अंतरिक्ष, ऊर्जा, शिक्षा और संस्कृति जैसे लगभग हर क्षेत्र पर विस्तार से चर्चा हुई।

सबसे बड़ी बात यह रही कि दोनों देशों ने रक्षा सहयोग को नई ऊंचाई देने का फैसला किया। ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली और हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों पर सहयोग बढ़ेगा। समुद्री सुरक्षा, संयुक्त अभ्यास, तटरक्षक बलों के बीच तालमेल और जहाज निर्माण में भी साथ काम होगा। भारत और इंडोनेशिया आतंकवाद के खिलाफ भी मिलकर काम करेंगे और नई तकनीक का गलत इस्तेमाल रोकने पर भी सहयोग बढ़ेगा।

व्यापार बढ़ाने, दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति मजबूत करने, इस्पात उद्योग में संयुक्त निवेश करने और दोनों देशों की मुद्राओं में लेन-देन बढ़ाने पर भी सहमति बनी। स्वास्थ्य क्षेत्र में दवाइयों के मानकों, चिकित्सा कर्मचारियों के प्रशिक्षण और खाद्य सुरक्षा पर समझौते हुए। कृषि, उर्वरक, ऊर्जा, दूरसंचार, विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान और आपदा प्रबंधन में भी नए समझौते हुए।

दोनों देशों ने समुद्री और हवाई संपर्क बढ़ाने, सबांग बंदरगाह के विकास में सहयोग, डिजिटल भुगतान व्यवस्था को मजबूत करने और छोटे कारोबारियों को डिजिटल बाजार से जोड़ने की दिशा में भी कदम बढ़ाया। साथ ही सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूत करने के लिए प्रंबानन मंदिर के संरक्षण कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा और दोनों देशों ने अगले दो वर्षों को गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर और की हजर देवंतरा की सांस्कृतिक स्मृति के रूप में मनाने का फैसला भी किया।

बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी का यह तीन देशों का दौरा कई मायनों में सफल माना जा सकता है। न्यूजीलैंड के साथ ऐतिहासिक नई साझेदारी बनी, ऑस्ट्रेलिया के साथ रक्षा, शिक्षा और ऊर्जा संबंधों को नई मजबूती मिली, जबकि इंडोनेशिया के साथ समुद्री सुरक्षा, व्यापार और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग का नया रास्ता खुला। इन समझौतों का असर आने वाले वर्षों में भारत की सुरक्षा, व्यापार, शिक्षा, कृषि, ऊर्जा और रोजगार जैसे कई क्षेत्रों में दिखाई दे सकता है। यही वजह है कि इस पूरे दौरे को भारत की विदेश नीति के लिए एक मजबूत और दूरगामी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है।

प्रेरणा

असफलता की ठोकरें ही सफलता की सबसे मजबूत सीढ़ियां बनती हैं

जीवन में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने कभी असफलता का स्वाद न चखा हो। जो जितना बड़ा लक्ष्य लेकर चलता है, उसके सामने उतनी ही बड़ी चुनौतियां आती हैं। बहुत से लोग पहली या दूसरी असफलता के बाद ही स्वयं को अयोग्य मान बैठते हैं, जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत होती है। असफलता किसी व्यक्ति की क्षमता का प्रमाण नहीं होती, बल्कि यह इस बात का संकेत होती है कि अभी सीखने, समझने और स्वयं को बेहतर बनाने की प्रक्रिया जारी है। इतिहास इस सत्य का साक्षी है कि संसार के अधिकांश महान व्यक्तियों ने सफलता से पहले अनेक बार असफलताओं का सामना किया। यदि वे भी निराश होकर अपने प्रयास रोक देते, तो शायद दुनिया उनके योगदान से कभी परिचित न हो पाती। प्राचीन भारत के महान नीति-निर्माता और शिक्षक आचार्य चाणक्य अपने शिष्यों को केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देते थे, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं को सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाते थे। एक बार तक्षशिला में उनका एक छात्र अत्यंत निराश होकर उनके पास पहुंचा। उसके चेहरे पर चिंता और मन में असफलता का बोझ साफ दिखाई दे रहा था। उसने विनम्रता से कहा, "आचार्य, मैं पूरी मेहनत करता हूं, दिन-रात अध्ययन करता हूं, फिर भी मुझे आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिल रहा। ऐसा लगता है कि मेरे सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं।"

चाणक्य ने छात्र की बात ध्यानपूर्वक सुनी। उन्होंने तुरंत कोई उपदेश देने के बजाय उससे एक सरल प्रश्न पूछा, "जब कोई किसान खेत में बीज बोता है, तो क्या वह हर दिन मिट्टी खोदकर यह देखने की कोशिश करता है कि बीज अंकुरित हुआ या नहीं?" छात्र ने तुरंत उत्तर दिया, "नहीं आचार्य, यदि ऐसा किया जाए तो बीज नष्ट हो जाएगा और वह कभी पौधा नहीं बन पाएगा।"

चाणक्य मुस्कुराए और बोले, "यही बात तुम्हारे जीवन पर भी लागू होती है। तुम अपने हर प्रयास के बाद परिणाम देखने की इतनी जल्दी करते हो कि स्वयं अपने विश्वास को ही खोद डालते हो। जब मन में संदेह बार-बार जन्म लेता है, तो वह परिश्रम की जड़ों को कमजोर कर देता है। जिस प्रकार बीज को समय, धैर्य, पानी और सूर्य का प्रकाश चाहिए, उसी प्रकार सफलता को भी निरंतर प्रयास, आत्मविश्वास और उचित समय की आवश्यकता होती है।" छात्र कुछ क्षण तक मौन रहा। उसे महसूस हुआ कि उसकी सबसे बड़ी समस्या परिश्रम की कमी नहीं, बल्कि धैर्य की कमी थी। वह हर छोटी असफलता को अपनी अंतिम हार मान लेता था। चाणक्य ने आगे कहा, "धैर्य वह शक्ति है जो अदृश्य परिश्रम को दृश्य सफलता में बदल देती है। जो व्यक्ति बीच रास्ते में ही रुक जाता है, वह कभी यह नहीं जान पाता कि मंजिल उससे कितनी निकट थी।"

इन शब्दों ने छात्र के मन में नई ऊर्जा भर दी। उसने विनम्रतापूर्वक पूछा, "आचार्य, फिर मुझे क्या करना चाहिए?" चाणक्य ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "अपना कर्म पूरी निष्ठा से करते रहो और समय को उसका कार्य करने दो। प्रकृति में हर परिवर्तन का अपना निश्चित समय होता है। कोई भी वृक्ष एक दिन में विशाल नहीं बनता और कोई भी महान व्यक्ति एक प्रयास में महान नहीं कहलाता।"

यह छोटी-सी घटना जीवन का एक बहुत बड़ा संदेश देती है। आज का युग परिणामों की तेजी का युग बन गया है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी मेहनत का फल तुरंत मिल जाए। यदि कुछ दिनों में सफलता दिखाई नहीं देती तो वह स्वयं पर संदेह करने लगता है। यही अधैर्य अनेक प्रतिभाशाली लोगों को उनके लक्ष्य से दूर कर देता है। जबकि वास्तविक सफलता उन्हीं लोगों के हिस्से में आती है जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने प्रयास जारी रखते हैं।

असफलता का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति योग्य नहीं है। इसका अर्थ केवल इतना होता है कि अभी कुछ नया सीखना बाकी है। प्रत्येक असफलता हमें हमारी कमियों का परिचय कराती है और उन्हें सुधारने का अवसर देती है। यदि जीवन में कभी असफलता न मिले, तो व्यक्ति अपनी कमजोरियों को पहचान ही नहीं पाएगा। इसलिए असफलता वास्तव में सफलता की तैयारी का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहां लोगों ने बार-बार असफल होने के बाद असाधारण सफलता प्राप्त की। वैज्ञानिकों ने वर्षों तक प्रयोग किए, अनेक बार विफल हुए, तब जाकर कोई नई खोज संभव हुई। खिलाड़ियों ने हजारों घंटे अभ्यास किया, अनेक प्रतियोगिताओं में हार का सामना किया, तब जाकर वे विश्व विजेता बने। उद्यमियों ने व्यापार में नुकसान झेला, गलतियां कीं, फिर अनुभव के आधार पर नई शुरुआत की और अंततः सफलता प्राप्त की। यदि वे पहली असफलता के बाद हार मान लेते, तो उनकी कहानी कभी प्रेरणा नहीं बनती।

धैर्य केवल प्रतीक्षा करने का नाम नहीं है। धैर्य का वास्तविक अर्थ है प्रतीक्षा के दौरान भी पूरी निष्ठा से अपना कार्य करते रहना। जो व्यक्ति कठिन समय में भी अपने उद्देश्य से नहीं भटकता, वही अंततः अपनी मंजिल तक पहुंचता है। जीवन की हर बड़ी उपलब्धि समय मांगती है और समय केवल उसी का साथ देता है जो निरंतर कर्म करता रहता है।

आज विद्यार्थियों से लेकर नौकरीपेशा लोगों और व्यवसायियों तक, लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के दबाव में जीवन जी रहा है। प्रतियोगिता बढ़ गई है, अपेक्षाएं बढ़ गई हैं और परिणाम जल्दी पाने की इच्छा भी बढ़ गई है। ऐसे समय में चाणक्य का यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यदि व्यक्ति अपने प्रयासों पर विश्वास बनाए रखे, अपनी गलतियों से सीखता रहे और धैर्य के साथ आगे बढ़े, तो सफलता देर से अवश्य आएगी, लेकिन स्थायी होगी।

जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है कि हर रात के बाद सुबह होती है और हर कठिनाई के बाद नया अवसर जन्म लेता है। असफलता कभी भी अंतिम निर्णय नहीं होती। यह केवल एक पड़ाव है, जहां से व्यक्ति और अधिक परिपक्व, अधिक अनुभवी और अधिक मजबूत बनकर आगे बढ़ता है। जो लोग असफलता से डरते नहीं, बल्कि उसे अपना शिक्षक बना लेते हैं, वही भविष्य में दूसरों के लिए प्रेरणा बनते हैं।

इसलिए जब भी जीवन में निराशा या असफलता सामने आए, तो उसे अपनी यात्रा का अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत मानना चाहिए। अपने प्रयासों को संदेह की दृष्टि से देखने के बजाय उन्हें समय देना चाहिए। जिस प्रकार मिट्टी के भीतर छिपा बीज धैर्य के साथ एक दिन विशाल वृक्ष बन जाता है, उसी प्रकार निरंतर परिश्रम, अटूट विश्वास और अडिग धैर्य से किया गया हर प्रयास एक दिन अवश्य फल देता है। यही जीवन का शाश्वत नियम है कि असफलता प्रगति की विरोधी नहीं, बल्कि उसकी सबसे विश्वसनीय साथी होती है, और जो व्यक्ति धैर्य तथा कर्म का साथ कभी नहीं छोड़ता, वही अंततः अपने जीवन का इतिहास स्वयं लिखता है।

सिर्फ 2 मिनट में 60 राउंड फायर, 4 शूटर ढेर, Deepak Nandal Gang की धज्जियाँ उड़ गयीं

हरियाणा के गुरुग्राम की सबसे सुरक्षित और पॉश मानी जाने वाली सुशांत लोक कॉलोनी गुरुवार रात अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट से दहल उठी। महज दो मिनट तक चली जबरदस्त मुठभेड़ में साठ से अधिक गोलियां चलीं और पूरा इलाका रणभूमि में बदल गया। ब्रिटेन में बैठे कुख्यात गैंगस्टर दीपक नांदल के इशारे पर कथित रूप से दस करोड़ रुपये की रंगदारी वसूलने और कारोबारी की हत्या करने पहुंचे पांच शूटरों को क्राइम ब्रांच ने चारों ओर से घेर लिया। मुठभेड़ में चार शूटर मारे गए, एक गंभीर रूप से घायल हो गया, जबकि तीन पुलिसकर्मी भी गोली लगने से घायल हुए। हरियाणा के इतिहास में इस स्तर की मुठभेड़ बेहद दुर्लभ मानी जा रही है और इसने यह भी संकेत दे दिया है कि दिल्ली एनसीआर में संगठित अपराध और रंगदारी का जाल अब पहले से कहीं अधिक खतरनाक हो चुका है। घटना रात करीब नौ बजकर पचास मिनट की है। काली स्कॉर्पियो में सवार पांच हमलावर सुशांत लोक स्थित एक प्रमुख कारोबारी के घर पहुंचे। गाड़ी की नंबर प्लेट पर काली पट्टी लगाकर उसे कैमरों की नजर से बचाने की कोशिश की गई थी। तीन बदमाश गाड़ी से उतरे और घर के बाहर खड़ी गाड़ियों, पहली मंजिल की बालकनी और खिड़कियों पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। उस समय कारोबारी घर पर नहीं थे और अपने मित्रों के साथ एक पब में गये हुए थे। घर के भीतर उनकी पत्नी, भाई, बहनोई और घरेलू कर्मचारी मौजूद थे। कई गोलियां घर की दीवारों तक पहुंचीं, लेकिन संयोग से कोई भी घायल नहीं हुआ।

पुलिस के मुताबिक क्राइम ब्रांच को पहले ही खुफिया सूचना मिल चुकी थी कि प्रमुख कारोबारियों पर हमला हो सकता है। इसी कारण संभावित स्थलों के आसपास कई दिनों से सादे कपड़ों में टीमें तैनात थीं। सूचना यह भी थी कि हथियारबंद बदमाश काली स्कॉर्पियो में घूम रहे हैं। जैसे ही हमलावरों ने गोलीबारी शुरू की, क्राइम ब्रांच की पहली टीम ने उन्हें आत्मसमर्पण के लिए कहा। जवाब में बदमाशों ने पुलिस पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दीं। इसी बीच दो अन्य टीमों ने गली के बाकी दोनों रास्ते भी बंद कर दिए। टी-आकार वाली गली में घिर चुके बदमाशों के पास बच निकलने का कोई रास्ता नहीं बचा था।

बताया जा रहा है कि करीब तीस पुलिसकर्मियों ने इस अभियान में हिस्सा लिया। पुलिस का कहना है कि शूटर स्वचालित पिस्तौलों से लगातार फायरिंग कर रहे थे और उन्होंने करीब चालीस गोलियां चलाईं। जवाबी कार्रवाई में क्राइम ब्रांच ने भी मोर्चा संभाला। घनी आबादी वाले इलाके में आम लोगों की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस ने बेहद सतर्कता बरती, लेकिन जब बदमाश नहीं रुके तो उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया गया। दो मिनट तक चली इस मुठभेड़ के दौरान आसपास के लोग अपनी जान बचाने के लिए गाड़ियों और पेड़ों की आड़ में छिप गए। कई लोगों ने अपने मोबाइल फोन से घटना के वीडियो भी बनाए, जिनमें लगातार गूंजती गोलियों की आवाज और हथियारबंद पुलिसकर्मी दिखाई दे रहे हैं।

मुठभेड़ में दीपा उर्फ संदीप, नितिन, अंकित और आर्यन की मौत हो गई, जबकि शिवम गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तत्काल मेदांता अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है। क्राइम ब्रांच के पुलिस उपायुक्त हितेश यादव ने कहा कि घायल आरोपी को हर हाल में जीवित रखना जरूरी है ताकि पूरे गिरोह और साजिश का पर्दाफाश किया जा सके। उन्होंने कहा कि पुलिस को पहले से भरोसेमंद सूचना थी कि दीपक नांदल किसी भी समय हमला करा सकता है। जैसे ही गोलीबारी शुरू हुई, पुलिस ने बदमाशों को भागने का कोई मौका नहीं दिया। उन्होंने कहा कि इस कार्रवाई का मकसद यह स्पष्ट संदेश देना है कि गुरुग्राम और हरियाणा अपराधियों के लिए सुरक्षित ठिकाना नहीं बन सकते।

पुलिस के अनुसार दीपक नांदल लंबे समय से कारोबारी से दस करोड़ रुपये की रंगदारी मांग रहा था। रकम नहीं मिलने पर उसने कई बार धमकी भरे संदेश भेजे और अंततः हत्या की नीयत से शूटरों को भेजा। मुठभेड़ के बाद फोरेंसिक और बैलिस्टिक विशेषज्ञों ने घटनास्थल से पांच पिस्तौल, पचास से अधिक खाली कारतूस, जिंदा कारतूस और गोलियों से छलनी स्कॉर्पियो बरामद की। जांच में यह भी सामने आया कि स्कॉर्पियो कई हाथों से गुजरने के बाद किराये पर ली गई थी। मामले में हत्या के प्रयास, संगठित अपराध और शस्त्र अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

हालांकि इस पूरे घटनाक्रम के बीच एक नया विवाद भी खड़ा हो गया है। मुठभेड़ में मारे गए तीन युवकों- आर्यन, अंकित और नितिन के परिवारों ने पुलिस के इस दावे को सिरे से खारिज कर दिया है कि उनके बेटे दीपक नांदल गिरोह से जुड़े हुए थे। रोहतक जिले के बालोठ गांव के रहने वाले इन युवकों के परिजनों का कहना है कि उन्हें अपने बेटों की मौत की जानकारी शुक्रवार सुबह गांव के चौकीदार के जरिए मिली और इससे पहले उन्हें किसी भी तरह की आपराधिक गतिविधि की कोई जानकारी नहीं थी।

परिजनों के अनुसार आर्यन बारहवीं कक्षा का छात्र था और पिछले दो वर्षों से भाला फेंक की तैयारी कर रहा था। उसके पिता प्रदीप का कहना है कि आर्यन के पास मोबाइल फोन तक नहीं था और वह नितिन के साथ गया था। उन्होंने कहा कि बच्चों को बहकाना आसान होता है, इसलिए उन्हें एक मौका मिलना चाहिए था। उन्होंने कहा कि कार्रवाई गैंगस्टरों पर होनी चाहिए थी, मासूम बच्चों पर नहीं। वहीं अंकित के पिता अनिल कुमार ने बताया कि उनका बेटा पांच भाई बहनों में इकलौता पुत्र था और दो दिन पहले यह कहकर घर से निकला था कि वह हरिद्वार कांवड़ लेने जा रहा है। उनका दावा है कि अंकित का कभी कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं रहा। नितिन के पिता संजय कुमार ने स्वीकार किया कि उनके बेटे का नाम पहले एक आपराधिक मामले में आया था, लेकिन उन्होंने दीपक नांदल गिरोह से किसी भी संबंध से इंकार किया।

अभियान

आस्था से आगे भी अनोखा है श्रीजगन्नाथ धाम, सदियों पुरानी परंपराएं और रहस्य आज भी दुनिया को करते हैं विस्मित

भारत को मंदिरों और आध्यात्मिक परंपराओं की भूमि कहा जाता है। यहां ऐसे अनेक तीर्थ हैं, जिनका महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वे इतिहास, संस्कृति, स्थापत्य कला और लोकविश्वास के अद्भुत केंद्र भी हैं। इन्हीं पवित्र स्थलों में ओडिशा के पुरी में स्थित भगवान श्रीजगन्नाथ का मंदिर सबसे विशिष्ट माना जाता है। चार धामों में शामिल यह पावन धाम करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र है। इसे 'श्रीक्षेत्र' और 'धरती का वैकुंठ' भी कहा जाता है। हर वर्ष देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु यहां भगवान श्रीजगन्नाथ, उनके बड़े भाई भगवान बलभद्र और बहन देवी सुभद्रा के दर्शन करने पहुंचते हैं। लेकिन यह मंदिर केवल अपनी भव्यता और धार्मिक महत्व के कारण ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यहां की परंपराएं, अनोखी व्यवस्थाएं और सदियों से चले आ रहे रहस्य भी इसे दुनिया के सबसे चर्चित मंदिरों में शामिल करते हैं।

पुरी का श्रीजगन्नाथ मंदिर भारतीय संस्कृति की उस जीवंत विरासत का प्रतीक है, जहां धर्म, दर्शन, लोकजीवन और विज्ञान के कई आयाम एक साथ दिखाई देते हैं। लगभग आठ सौ वर्ष पहले निर्मित यह मंदिर कलिंग शैली की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। मंदिर का विशाल शिखर, पत्थरों पर उकेरी गई बारीक नक्काशी, विशाल प्रांगण और धार्मिक अनुशासन हर श्रद्धालु को पहली ही झलक में प्रभावित कर देता है। समुद्र तट के निकट स्थित यह मंदिर केवल ओडिशा ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भगवान जगन्नाथ को भगवान श्रीकृष्ण का विराट और सर्वसमावेशी स्वरूप माना जाता है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा एक साथ विराजमान हैं। इन तीनों विग्रहों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे पत्थर या धातु के नहीं, बल्कि विशेष प्रकार की पवित्र नीम की लकड़ी से निर्मित हैं। दुनिया के किसी भी बड़े मंदिर में इस प्रकार की परंपरा बहुत कम देखने को मिलती है। समय-समय पर इन प्रतिमाओं का विधिवत परिवर्तन किया जाता है, जिसे 'नवकलेवर' कहा जाता है। यह प्रक्रिया अत्यंत गोपनीय धार्मिक अनुष्ठानों के बीच संपन्न होती है और इसमें केवल परंपरागत सेवायतों को ही शामिल होने की अनुमति होती है। धार्मिक मान्यता है कि पुराने विग्रहों से दिव्य ब्रह्म तत्व नए विग्रहों में स्थापित किया जाता है। इस प्रक्रिया को देखने का अधिकार किसी सामान्य व्यक्ति को नहीं होता, जिससे यह परंपरा आज भी रहस्य और श्रद्धा का विषय बनी हुई है। भगवान जगन्नाथ की प्रतिमाओं का अधूरा स्वरूप भी सदियों से लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। धार्मिक कथाओं के अनुसार मालवा के राजा इंद्रद्युम्न ने भगवान विष्णु के दिव्य स्वरूप की स्थापना का संकल्प लिया था। उन्होंने देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा से प्रतिमाओं के निर्माण का आग्रह किया। विश्वकर्मा ने शर्त रखी कि वे एकांत कक्ष में बिना किसी व्यवधान के कार्य करेंगे और निर्धारित समय से पहले कोई भी द्वार नहीं खोलेगा। कई दिनों तक भीतर से कोई आवाज न आने पर राजा की चिंता बढ़ गई और उन्होंने समय से पहले द्वार खोल दिया। जैसे ही द्वार खुला, विश्वकर्मा अदृश्य हो गए और प्रतिमाएं अधूरी रह गईं। कहा जाता है कि भगवान ने स्वयं उसी स्वरूप में विराजमान रहने की इच्छा व्यक्त की। तभी से बिना पूर्ण हाथ-पैर वाली इन प्रतिमाओं की पूजा की जाती है और यही स्वरूप श्रीजगन्नाथ की विशिष्ट पहचान बन चुका है। हर वर्ष आषाढ़ मास में निकलने वाली जगन्नाथ रथयात्रा विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में गिनी जाती है। इस अवसर पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा तीन अलग-अलग भव्य रथों में विराजमान होकर मुख्य मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक यात्रा करते हैं। इन रथों का निर्माण भी हर वर्ष नई लकड़ी से किया जाता है। किसी भी पुराने रथ का दोबारा उपयोग नहीं किया जाता। हजारों कारीगर कई महीनों तक परंपरागत विधि से इन रथों का निर्माण करते हैं। रथों का आकार, ऊंचाई, पहियों की संख्या, रंग और सजावट शास्त्रीय नियमों के अनुसार तय होती है। लाखों श्रद्धालु इन रथों को रस्सियों से खींचने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए घंटों प्रतीक्षा करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि रथ की रस्सी को स्पर्श करना भी अत्यंत पुण्यदायक होता है। श्रीजगन्नाथ मंदिर का विशाल सुदर्शन चक्र भी अपने आप में एक अद्भुत स्थापत्य चमत्कार माना जाता है। मंदिर के शिखर पर स्थापित यह धातु का चक्र कई सौ वर्षों से बिना किसी आधुनिक तकनीक के मजबूती से स्थापित है। स्थानीय मान्यता है कि श्रद्धालु इसे शहर के किसी भी कोने से देखें, यह उनकी ओर मुख किए हुए प्रतीत होता है। वास्तु विशेषज्ञ इसे प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला की उत्कृष्ट योजना बताते हैं, जबकि श्रद्धालु इसे भगवान की दिव्य शक्ति का प्रतीक मानते हैं।

मंदिर के शिखर पर फहराने वाला ध्वज भी अनेक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। यह ध्वज प्रतिदिन बदला जाता है और यह कार्य विशेष प्रशिक्षित सेवायत बिना किसी आधुनिक सुरक्षा उपकरण के सैकड़ों फीट ऊंचाई पर चढ़कर करते हैं। यह परंपरा सदियों से लगातार चली आ रही है। श्रद्धालुओं के बीच यह विश्वास भी प्रचलित है कि ध्वज हवा की दिशा के विपरीत लहराता हुआ दिखाई देता है। यद्यपि वैज्ञानिक इसे वायु प्रवाह और ऊंचाई से जुड़ा प्राकृतिक प्रभाव मानते हैं, लेकिन आस्था की दृष्टि से इसे भगवान की विशेष कृपा माना जाता है।

श्रीजगन्नाथ मंदिर की रसोई दुनिया की सबसे बड़ी धार्मिक रसोइयों में शामिल है। यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद तैयार किया जाता है। विशेष बात यह है कि भोजन आज भी पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों में लकड़ी की आग पर पकाया जाता है। रसोई में सात-सात मिट्टी के बर्तनों को एक-दूसरे के ऊपर रखा जाता है। आश्चर्यजनक रूप से सबसे ऊपर रखा हुआ बर्तन पहले पक जाता है और नीचे वाले बर्तन बाद में पकते हैं। यह प्रक्रिया वर्षों से बिना किसी परिवर्तन के जारी है और श्रद्धालु इसे भगवान की अलौकिक व्यवस्था का प्रतीक मानते हैं।

महाप्रसाद की व्यवस्था भी अपने आप में अनूठी है। प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु मंदिर में प्रसाद ग्रहण करते हैं, लेकिन स्थानीय सेवायतों का अनुभव है कि कभी भोजन की कमी नहीं होती। जितने भक्त आते हैं, उसी अनुपात में महाप्रसाद उपलब्ध हो जाता है। वहीं मंदिर बंद होने तक भोजन भी समाप्त हो जाता है और अन्न व्यर्थ नहीं जाता। धार्मिक मान्यता है कि माता लक्ष्मी स्वयं मंदिर की रसोई की व्यवस्था देखती हैं और माता अन्नपूर्णा की कृपा से यहां कभी अन्न की कमी नहीं होती।

मंदिर से जुड़ा सबसे चर्चित रहस्य यह माना जाता है कि इसके ऊपर पक्षी उड़ते हुए दिखाई नहीं देते। स्थानीय लोगों के अनुसार मंदिर के मुख्य शिखर के ऊपर न तो पक्षी बैठते हैं और न ही नियमित रूप से उड़ान भरते दिखाई देते हैं। इसी प्रकार यह भी कहा जाता है कि मंदिर के ऊपर से विमान नहीं गुजरते। हालांकि विमान मार्गों का निर्धारण नागरिक उड्डयन के नियमों के अनुसार होता है और इन दावों के समर्थन में वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित निष्कर्ष उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी यह विषय श्रद्धालुओं और पर्यटकों के बीच लंबे समय से चर्चा का विषय बना हुआ है। एक और प्रसिद्ध मान्यता यह है कि मंदिर के सिंहद्वार के बाहर समुद्र की लहरों की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है, लेकिन जैसे ही श्रद्धालु मुख्य द्वार के भीतर प्रवेश करता है, लहरों का शोर लगभग समाप्त हो जाता है। वापस बाहर निकलने पर वही आवाज फिर सुनाई देने लगती है। वास्तु विशेषज्ञ इसे मंदिर की संरचना और ध्वनि के परावर्तन से जोड़ते हैं, जबकि श्रद्धालु इसे भगवान जगन्नाथ की दिव्य शक्ति का प्रभाव मानते हैं।

मंदिर की छाया को लेकर भी कई लोकमान्यताएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि दिन के समय मंदिर की स्पष्ट परछाई दिखाई नहीं देती। यद्यपि इसके पीछे प्रकाश, ऊंचाई और स्थापत्य संरचना से जुड़े वैज्ञानिक कारण बताए जाते हैं, लेकिन यह रहस्य आज भी लोगों की जिज्ञासा का विषय बना हुआ है।

श्रीजगन्नाथ धाम की एक विशेषता यह भी है कि यहां की सेवा व्यवस्था पूरी तरह परंपरागत है। मंदिर में सैकड़ों प्रकार की सेवाएं निर्धारित हैं और प्रत्येक सेवा विशेष परिवारों द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी निभाई जाती है। कोई भगवान के वस्त्र तैयार करता है, कोई भोग बनाता है, कोई पूजा की सामग्री की व्यवस्था करता है तो कोई रथ निर्माण में योगदान देता है। इस प्रकार सदियों पुरानी सेवा परंपरा आज भी बिना किसी व्यवधान के जारी है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का 'बैक टू स्कूल मिशन' अंतर्गत बनासकांठा के विद्यार्थियों के साथ प्रेरणादायी संवाद

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भावना है कि राज्य और देश का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
▸▸ समाज के सर्वांगीण विकास के लिए बेटियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
▸▸ मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को दिया आत्मविश्वास और उज्ज्वल भविष्य का मंत्र
▸▸ मुख्यमंत्री के साथ हुई बातचीत से उत्साह बढ़ा, अब नियमित पढ़ाई करके अपने सपने साकार करूंगी : लाभार्थी बेटी सुहानी
▸▸ शिक्षा की मुख्यधारा से वंचित बच्चों के लिए आशीर्वाद समान बन रहा है राज्य सरकार का 'बैक टू स्कूल मिशन'
▸▸ राज्य में बनासकांठा जिले में 29 हजार से अधिक बच्चों का पुनः स्कूल प्रवेश

गांधीनगर : राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के सार्वभौमीकरण तथा स्कूल ड्रॉप-आउट दर को कम करने के दृढ़ संकल्प के साथ पूरे राज्य में 'बैक टू स्कूल मिशन' चलाया जा रहा है।इस अभियान के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को बनासकांठा जिले के थराद तहसील के तेनीवाडा में विद्यालय में पुनः प्रवेश प्राप्त करने वाले बच्चों के साथ प्रेरणादायी संवाद किया।

मुख्यमंत्री ने विद्यालय में पुनः प्रवेश प्राप्त करने वाले लगभग 12 विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों तथा मेंटर्स के साथ आत्मीय संवाद किया।उन्होंने विद्यार्थियों से सहज और आत्मीयता के साथ बातचीत की तथा बच्चों के विद्यालय छोड़ने के कारणों, पुनः प्रवेश के बाद के शैक्षणिक अनुभवों और भविष्य को लेकर उनकी आशाओं के बारे में रुचिपूर्वक जानकारी ली। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय जाने, परिश्रमपूर्वक अध्ययन करने, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने तथा जीवन में ऊँचे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी बेटियाँ घर के कार्यों की जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की क्षमता रखती हैं। उन्होंने बेटियों की शिक्षा पर विशेष बल देते हुए कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए बेटियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। अभिभावकों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को नियमित शिक्षा दिलाएँ तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भावना है कि राज्य और देश का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। श्री पटेल ने आगे कहा कि इसी दृष्टि के साथ उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी महोत्सव जैसी जनभागीदारी आधारित पहलें प्रारंभ की थीं; जिसके परिणामस्वरूप आज समाज में शिक्षा के प्रति व्यापक जागरूकता उत्पन्न हुई है।उन्होंने कहा कि आज शिक्षक केवल बच्चों को पढ़ाने का ही नहीं, बल्कि विद्यालय छोड़ चुके प्रत्येक बच्चे को खोजकर पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की जिम्मेदारी भी सफलतापूर्वक निभा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा व्यक्ति, परिवार और समाज के सर्वांगीण विकास का सबसे प्रभावी साधन है। यदि गरीब और सामान्य परिवार अपनी नई पीढ़ी को शिक्षा देंगे तो वे वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से बाहर निकल सकेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा गरीबों के लिए राशन, स्वास्थ्य तथा अन्य अनेक कल्याणकारी योजनाएँ लागू की गई हैं।

इन सभी योजनाओं का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा, जब बच्चे शिक्षित बनेंगे और अपने जीवन में आगे बढ़ेंगे। शिक्षा द्वारा ही नई पीढ़ी का नव सृजन होगा तथा समग्र परिवार व समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त बनेगा।

इस अवसर पर बेटियों की अभिभावक मणीबेन ने कहा कि उनकी आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियाँ अनुकूल न होने के कारण उन्हें अपनी दोनों बेटियों की पढ़ाई बीच में ही छुड़वानी पड़ी थी। गाँव के विद्यालय के शिक्षकों द्वारा समझाने तथा सरकार की योजना के अंतर्गत अब दोनों बेटियों की पढ़ाई पुनः प्रारंभ कराई गई है।

इस अवसर पर लाभार्थी बेटी सुहानी ने कहा कि वह कक्षा 10 में पढ़ती थी। बोर्ड परीक्षा होने के कारण उसने पढ़ाई छोड़ दी थी। इसके बाद हमारे शिक्षक मेरे घर आए और मेरे अभिभावकों को समझाया। उसके बाद मेरे अभिभावक समझ गए और मैंने पुनः बोर्ड परीक्षा दी। मैं बोर्ड परीक्षा में पास हुई। इसके बाद मैंने कक्षा 11 में प्रवेश लिया है। मुख्यमंत्री ने आज मुझसे बात की, मुझे बहुत अच्छा लगा और अब मैं नियमित रूप से पढ़ने जाऊँगी।

वर्ष 2023-24, 2024-25 तथा 2025-26 के दौरान विभिन्न कारणों से बीच में विद्यालय छोड़ देने वाले बच्चों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए राज्य सरकार द्वारा यह विशेष अभियान चलाया गया है।

बनासकांठा जिला कलेक्टर श्री मिहिर पटेल के मार्गदर्शन में जिला शिक्षा अधिकारी तथा जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी के नेतृत्व में समग्र शिक्षा अभियान, शिक्षकों तथा तहसील स्तर की टीमों के सतत प्रयासों से इस मिशन के अंतर्गत राज्य में उत्कृष्ट कार्य किया गया है।

जिले में किए गए व्यापक सर्वेक्षण के दौरान कुल 37,415 ड्रॉपआउट बच्चों की पहचान की गई थी। इनमें से 29,451 बच्चों का सफलतापूर्वक पुनः प्रवेश (री-एनरोलमेंट) कराया गया है। पुनः प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में 14,875 बालक तथा 14,576 बालिकाएँ शामिल हैं।

इनमें से 23,032 विद्यार्थियों को गुजरात स्टेट ओपन स्कूल (जीएसओएस) से जोड़ा गया है, जबकि 6,368 विद्यार्थियों को नियमित विद्यालयों में पुनः प्रवेश दिलाया गया है। राज्य सरकार का 'बैक टू स्कूल मिशन' राज्य के एक भी बच्चे को शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहने देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं आशीर्वाद समान पहल साबित हो रही है।

पश्चिम रेलवे द्वारा 7/11 मुंबई उपनगरीय ट्रेन,धमाकों के पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित

आज से बीस वर्ष पूर्व, 11 जुलाई, 2006 को मुंबई ने अपने इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक का सामना किया था, जब पश्चिम रेलवे के माटुंगा रोड, माहिम, बांद्रा, सांताक्रुज़, जोगेश्वरी, बोरीवली तथा भायंदर स्टेशनों के निकट सात उपनगरीय ट्रेनों के प्रथम श्रेणी डिब्बों में सिलसिलेवार बम विस्फोट हुए थे। इस दुखद घटना की 20वीं बरसी के अवसर पर 11 जुलाई, 2026 को पश्चिम रेलवे ने दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की। वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने सम्मान स्वरूप संबंधित सातों स्टेशनों पर पुष्पक्र अर्पित किए तथा जान गंवाने वालों की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले अधिकारियों में माटुंगा रोड स्टेशन पर प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री वी. ए. मालेगांवकर, माहिम स्टेशन पर प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री सहर्ष बाजपेयी, बांद्रा स्टेशन पर प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री रविन्दर कुमार वर्मा, सांताक्रुज़ स्टेशन पर प्रमुख मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री रजनीश कुमार, जोगेश्वरी स्टेशन पर प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री अमित गुप्ता, बोरीवली स्टेशन पर प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर श्री रजनीश कुमार गोयल तथा भायंदर स्टेशन पर प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री आशीष वर्मा शामिल थे।

'जीरो रिस्क' के साथ पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्क; 31 हजार से अधिक पुलिसकर्मी रथयात्रा की सुरक्षा संभालेंगे

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 149वीं रथयात्रा की पूर्व तैयारियों एवं सुरक्षा व्यवस्था की उच्चस्तरीय समीक्षा की
▸▸ 240 से अधिक छत प्वाइंट, 65 ड्रोन और 2,800 से अधिक बॉडी-वॉर्न कैमरों से अहमदाबाद शहर पुलिस रथयात्रा पर निगरानी रखेगी
▸▸ 16 किलोमीटर लंबी भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा में 101 ट्रक, 30 अखाड़े और 18 भजन मंडलियाँ शामिल होंगी

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद महानगर में 6 मिनी रथयात्राओं सहित राज्यभर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाली 230 रथयात्राओं को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित रूप से संपन्न कराने के लिए मार्गदर्शन दिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में परंपरागत रूप से आयोजित होने वाली भगवान जगन्नाथजी की 149वीं रथयात्रा, जो आगामी आषाढ़ी दूज के अवसर पर 16 जुलाई को निकलेगी, उसे उत्साह, उमंग, शांति, सुरक्षा एवं सफलता के साथ संपन्न कराने के लिए पुलिस तथा महानगर पालिका प्रशासन की तैयारियों की शनिवार को गांधीनगर में आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक में विस्तारपूर्वक समीक्षा की।

मुख्यमंत्री ने बैठक में पुलिस प्रशासन को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि राज्य के विभिन्न स्थानों पर निकलने वाली लगभग 230 रथयात्राएँ शांतिपूर्ण एवं सुरक्षा के वातावरण में संपन्न हों, लोग उल्लासपूर्वक रथयात्रा के दर्शन कर सकें तथा किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना न हो, इसके लिए पूरी सावधानी बरती जाए।

मुख्यमंत्री ने अहमदाबाद में रथयात्रा मार्ग पर स्थित जर्जर इमारतों एवं मकानों के आसपास दर्शन के लिए लोगों की भीड़ न हो, इसके लिए भी कड़ी व्यवस्था करने के निर्देश नगर आयुक्त को दिए।

अहमदाबाद शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत ने विस्तृत प्रेजेंटेशन देते हुए बताया कि शहर पुलिस 'जीरो रिस्क' की रणनीति के साथ पूर्ण सतर्कता एवं तैयारी रखते हुए 31 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती के साथ 149वीं रथयात्रा को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए दिन-रात कार्य कर रही है।

इस रथयात्रा में 240 से अधिक छत प्वाइंट, 65 ड्रोन तथा 2,800 से अधिक बॉडी-वॉर्न कैमरों के माध्यम से अहमदाबाद शहर पुलिस पूरी यात्रा पर निगरानी रखेगी। यात्रा के दौरान अहमदाबाद महानगर पालिका के 15 मेडिकल ऑफिसर एवं 100 स्वास्थ्यकर्मी, 31 फायर वाहन तथा 237 अग्निशमन कर्मी भी तैनात रहेंगे।

भगवान जगन्नाथ की 16 किलोमीटर लंबी इस रथयात्रा में 101 ट्रक, 30 अखाड़े तथा 18 भजन मंडलियाँ शामिल होकर भक्तिमय वातावरण का निर्माण करेंगी। रथयात्रा शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में आयोजित हो, इसके लिए रथयात्रा से पूर्व शहर पुलिस द्वारा शांति समिति की 69 बैठकें, मोहल्ला समिति की 79 बैठकें तथा विभिन्न संप्रदायों के धार्मिक नेताओं के साथ लगभग 178 बैठकें आयोजित की गई हैं।

पुलिस आयुक्त ने कहा कि इतना ही नहीं; सांप्रदायिक एकता को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से रक्तदान शिविर, रात्रिकालीन क्रिकेट एवं वॉलीबॉल मैच, लोकडायरा तथा जेन-जी के साथ संवाद कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया है।

इस समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, पुलिस महानिदेशक श्री जी. एस. मलिक, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, नगर आयुक्त श्री बंचानिधि पाणि, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सचिव डॉ. अजय कुमार तथा क्राइम ब्रांच के संयुक्त पुलिस आयुक्त श्री शरद सिंघल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

मंडल रेलवे चिकित्सालय, प्रतापनगर में फाइब्रोस्कैन, लिवर स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन

पश्चिम रेलवे के मंडल रेलवे चिकित्सालय, प्रतापनगर, वडोदरा के ओपीडी कक्ष में चिकित्सा विभाग द्वारा मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ दीपाली तिवारी के मार्गदर्शन में लिवर स्क्रीनिंग (फाइब्रोस्कैन) शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य रेलवे अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों में यकृत (लिवर) संबंधी रोगों की प्रारंभिक अवस्था में पहचान कर समय पर उपचार एवं आवश्यक परामर्श उपलब्ध कराना था।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस शिविर में कुल 67 रेलवे अधिकारी, कर्मचारी एवं आश्रितों की फाइब्रोस्कैन जांच श्री अविनाश जगताप (BO) एवं श्री सुनील परमार (टेक्नीशियन), जाइडस हेल्थकेयर लिमिटेड, डिस्कवरी डिवीजन, वडोदरा तथा उनकी टीम द्वारा की गई।

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ दीपाली तिवारी ने बताया कि फाइब्रोस्कैन एक आधुनिक, सुरक्षित, दर्दरहित एवं गैर-आक्रामक जांच पद्धति है, जिसके माध्यम से लिवर में वसा (फैटी लिवर) एवं फाइब्रोसिस (लिवर में कठोरता/क्षति) का त्वरित आकलन किया जाता है। यह जांच विशेष रूप से मधुमेह, मोटापा, फैटी लिवर, लंबे समय तक शराब के सेवन, हेपेटाइटिस-बी/सी, बढ़े हुए लिवर एंजाइम तथा मेटाबॉलिक सिंड्रोम से पीड़ित व्यक्तियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

डॉ दीपाली के अनुसार, समय रहते लिवर रोगों की पहचान होने पर उचित जीवनशैली में परिवर्तन, नियमित चिकित्सकीय परामर्श एवं उपचार के माध्यम से सिरोसिस तथा अन्य गंभीर जटिलताओं से बचाव संभव है। मंडल रेलवे चिकित्सालय द्वारा समय-समय पर ऐसे स्वास्थ्य जागरूकता एवं जांच शिविर आयोजित किए जाते रहे है, ताकि रेलवे परिवार को बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

सूरत में बाढ़ से हुए नुकसान पर वराछा बैंक की बड़ी राहत : मात्र 9 प्रतिशत ब्याज पर 5 लाख रुपए तक की 'फ्लड लोन' योजना की घोषणा

शनिवार : सूरत में भारी बारिश और बाढ़ के कारण शहर के कई क्षेत्रों में पानी भर गया था। अचानक आई इस आपदा के समय कई औद्योगिक तथा आवासीय क्षेत्रों में पानी भर जाने से उद्योगों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और रोजगार को नुकसान पहुंचा है। ऐसे समय में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने शनिवार को सूरत के द वराछा को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड द्वारा मात्र 9 प्रतिशत ब्याज पर 5 लाख रुपए तक की 'फ्लड लोन' योजना तथा बाढ़ और जलभराव से सुरक्षा प्रदान करने वाली नई बीमा योजनाओं को लॉन्च किया ।

सूरत शहर में हाल ही में भारी बारिश के कारण उत्पन्न हुई संवेदनशील स्थिति के बीच उप मुख्यमंत्री ने सूरत के नागरिकों की जिंदादिली और संकट के समय एक-दूसरे की मदद करने की भावना को नमन किया।

वराछा बैंक के मुख्य कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ के कारण हुए नुकसान का सही आकलन करने के लिए सरकार द्वारा 72 घंटे में सर्वेक्षण पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें से 80 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। छोटी-बड़ी इंडस्ट्रीज, दुकानों और कमर्शियल इकाइयों को हुए नुकसान की रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इसके आधार पर राज्य सरकार द्वारा शीघ्र ही राहत पैकेज की घोषणा की जाएगी।

उप मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि सूरत की मिट्टी में मुश्किलों से लड़ने और सकारात्मकता के साथ फिर से खड़े होने की ताकत है। उन्होंने सरकार और स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर शीघ्र ही सूरत को फिर से खड़ा करने की कटिबद्धता व्यक्त की।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि 'आपदा के समय वराछा बैंक आपके साथ' की उक्ति को वराछा बैंक ने सही अर्थों में साकार किया है। उन्होंने संकट के समय वराछा बैंक की इस उत्कृष्ट पहल की सराहना की। मुश्किल के इस समय में वराछा को-ऑपरेटिव बैंक ने सामाजिक उत्तरदायित्व निभाते हुए बाढ़ प्रभावितों के लिए मात्र 9 प्रतिशत की ब्याज दर पर 5 लाख रुपए तक की 'फ्लड लोन' देने की घोषणा की है, जिसके लिए उन्होंने बैंक को बधाई दी।

इस अवसर पर स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया ने भी वराछा बैंक की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस उत्कृष्ट निर्णय से छोटे व्यापारियों को अधिकतम लाभ होगा।

इस अवसर पर विधायक श्री प्रवीणभाई घोघारी तथा बैंक के चेयरमैन श्री नरेंद्रभाई काकडिया व श्री विठ्ठलभाई धानाणी ने प्रासंगिक संबोधन किया । इस अवसर पर विधायक श्री कांति बलर, अग्रणी श्री जयंतिभाई एकलेरा, श्री मनहरभाई साचपरा तथा मुकेशभाई पटेल सहित अन्य अग्रणी उपस्थित रहे।

योजना का त्वरित लाभ लिया जा सके, इसके लिए बैंक ने आकर्षक शर्तों की घोषणा की है :

आपदा के समय सुरक्षित कल के लिए 5 लाख रुपए तक की ऋण सहायता। ग्राहकों पर आर्थिक बोझ न पड़े, इसके लिए ब्याज दर मात्र 9 प्रतिशत रखी गई है। ऋण की अदायगी के लिए 60 महीने की लंबी अवधि दी जाएगी। इस ऋण को प्राप्त करने में कोई परेशानी न हो, इसके लिए वराछा बैंक के मुख्य कार्यालय में एक विशेष डेडिकेटेड स्पेस भी तैयार किया गया है, जहां से आवेदकों को त्वरित मार्गदर्शन और ऋण की मंजूरी मिल सकेगी।

बाढ़ और जलभराव से सुरक्षा प्रदान करने वाली नई बीमा योजना

भविष्य में ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध आर्थिक सुरक्षा मिल सके, इस उद्देश्य से वराछा बैंक द्वारा एक विशेष जनरल इंश्योरेंस (बीमा) योजना भी शुरू की गई है। इस योजना के तहत 1,000 रुपए के वार्षिक प्रीमियम पर 10 लाख रुपए के माल के स्टॉक के लिए बीमा योजना का लाभ लिया जा सकेगा। बाढ़ या क्षेत्रों में जलभराव जैसी स्थिति में व्यापारियों के स्टॉक, गोदाम या संपत्ति को होने वाले नुकसान के विरुद्ध बीमाधारक को पूर्ण आर्थिक सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

बेचराजी माता जी के भक्तों के लिए बड़ी खुशखबरी: कटोसण रोड–बेचराजी

नीति आयोग की रिपोर्ट में दावा किया गया है:

रणुज रेलखंड पर पहली बार 120 किमी/घंटा की गति से सफल स्पीड ट्रायल

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के कटोसण रोड–बेचराजी–रणुज (63 किलोमीटर) ब्रॉडगेज रेलखंड का रेल संरक्षा आयुक्त (पश्चिम सर्कल) द्वारा 09 से 11 जुलाई, 2026 तक सफलतापूर्वक संरक्षा निरीक्षण सम्पन्न किया गया। यह निरीक्षण इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाओं के शुभारंभ की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं अंतिम तकनीकी चरण है।

तीन दिवसीय निरीक्षण के दौरान रेल संरक्षा आयुक्त ने मोटर ट्रॉली द्वारा संपूर्ण रेलखंड का विस्तृत निरीक्षण किया। 11 जुलाई, 2026 को इस रेलखंड पर 120 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से सफल स्पीड ट्रायल किया गया, जिसमें रेलखंड पर सुरक्षित अधिकतम गति की भी जांच की गई।

निरीक्षण के दौरान ट्रैक की गुणवत्ता, सिग्नल एवं दूरसंचार प्रणाली, पुलों, ओवरहेड विद्युत (OHE) प्रणाली, इंटरलॉकिंग, ट्रैक फिटिंग, बैलास्ट, ओएचई की ऊंचाई तथा अन्य सभी संरक्षा मानकों का विस्तृत परीक्षण किया गया। अंतिम संरक्षा स्वीकृति प्राप्त होने के उपरांत इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाओं का संचालन प्रारंभ किया जाएगा।

इस निरीक्षण में रेल संरक्षा आयुक्त (पश्चिम सर्कल) श्री ई. श्रीनिवास, मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) श्री प्रदीप गुप्ता, डायरेक्टर, गुजरात रेल अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (जी-राइड) श्री राजकुमार, जनरल मैनेजर (सिविल), जी-राइड श्री शिवेन्द्र कुमार, मुख्य ट्रैक इंजीनियर, मुख्य परिचालन प्रबंधक (जी) सहित निर्माण एवं ओपन लाइन विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

परियोजना की प्रमुख विशेषताएं

कटोसण रोड–बेचराजी–रणुज (63 किमी) गेज परिवर्तन परियोजना को वर्ष 2017 में स्वीकृति प्रदान की गई थी। लगभग 1000 करोड़ की लागत से विकसित इस परियोजना का निर्माण भारतीय रेल एवं गुजरात रेल अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (G-RIDE) के संयुक्त उपक्रम के अंतर्गत किया गया है। इस रेलखंड पर 14 रेलवे स्टेशन, 9 बड़े पुल, 100 छोटे पुल, 47 रोड अंडर ब्रिज/लिमिटेड हाइट सब-वे (RUB/LHS) तथा 16 कर्व विकसित किए गए हैं।

बेचराजी स्टेशन का धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व

इस रेलखंड का प्रमुख स्टेशन बेचराजी गुजरात के महेसाणा जिले में स्थित है, जिसे विश्वविख्यात श्री बहुचर माता मंदिर के प्रमुख प्रवेश द्वार के रूप में विकसित किया गया है। बहुचर माता मंदिर गुजरात के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है, जहां प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने गायकवाड़ बड़ौदा रेलवे (GBR) का विस्तार बेचराजी तक कराया था।

क्षेत्र को मिलेगा आधुनिक रेल संपर्क

लंबे समय तक बेचराजी क्षेत्र रेल संपर्क से वंचित रहा, जिसके कारण श्रद्धालुओं, स्थानीय नागरिकों तथा औद्योगिक इकाइयों को मुख्यतः सड़क मार्ग पर निर्भर रहना पड़ता था। इस परियोजना के पूर्ण होने से क्षेत्र को आधुनिक रेल नेटवर्क से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त हो गया है, जिससे धार्मिक पर्यटन, औद्योगिक विकास तथा क्षेत्रीय परिवहन व्यवस्था को नई गति मिलेगी।

तीन दिवसीय संरक्षा निरीक्षण संरक्षा निरीक्षण के प्रथम दिन कटोसण रोड से बेचराजी, दूसरे दिन बेचराजी से चाणसमा तथा तीसरे दिन चाणसमा से रणुज तक रेलखंड का विस्तृत निरीक्षण किया गया। सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण होने तथा अंतिम संरक्षा स्वीकृति प्राप्त होने के बाद इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाएं प्रारंभ करने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

क्षेत्रीय विकास को मिलेगा नया आयाम

इस रेलखंड के प्रारंभ होने से महेसाणा एवं पाटण जिलों के प्रमुख केंद्र बेचराजी, खांभेल एवं चाणसमा बेहतर रेल संपर्क से जुड़ जाएंगे। इससे स्थानीय नागरिकों, विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, व्यापारियों तथा उद्योगों को सुरक्षित, किफायती एवं सुविधाजनक परिवहन सुविधा उपलब्ध होगी। साथ ही विश्व प्रसिद्ध बहुचर माता मंदिर आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की यात्रा अधिक सुगम बनेगी।

यह रेल परियोजना क्षेत्र में रोजगार सृजन, पर्यटन, व्यापार एवं औद्योगिक विकास को नई गति प्रदान करेगी। साथ ही पर्यावरण-अनुकूल, सुरक्षित एवं सतत रेल परिवहन को बढ़ावा देते हुए क्षेत्रीय आर्थिक एवं सामाजिक विकास को एक नया आयाम देगी।

10 वर्षों में 94 हजार सरकारी स्कूल बंद हुए, शिक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंताएं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। केंद्र सरकार के नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रतिदिन 25 स्कूल बंद हो रहे हैं। पिछले 10 वर्षों में 94,000 सरकारी स्कूल बंद हो चुके हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में सबसे अधिक 40,000 स्कूल बंद हुए हैं। इसके चलते 22.6 अरब छात्रों का प्रवेश रद्द हो गया है।

नीति आयोग द्वारा जारी भारतीय शिक्षा प्रणाली पर हालिया रिपोर्ट बेहद चौंकाने वाली है। 'भारत में स्कूली शिक्षा प्रणालीः गुणवत्ता और उपलब्धि के लिए सामयिक विश्लेषण और नीतिगत रूपरेखा' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट से पता चलता है कि पिछले 10 वर्षों में देश से लगभग 94,000 सरकारी स्कूल गायब हो गए हैं।

शिक्षा जगत में चिंता की लहर पैदा करने वाले इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा इस समय एक गंभीर संकट से गुजर रही है। इसके अलावा, रिपोर्ट के चौंकाने वाले आंकड़े बताते हैं कि पिछले 10 वर्षों में भारत में औसतन प्रतिदिन 25 स्कूल बंद हुए हैं, जिनमें से अधिकांश सरकारी स्कूल हैं। सरकारी स्कूलों की संख्या में गिरावटः 2014-15 में देश में सरकारी स्कूलों की संख्या 11.07 लाख थी, जो 2024-25 में घटकर 10.13 लाख रह गई है।

इस दौरान सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या भी 83,000 से घटकर 79,000 हो गई है। वहीं निजी स्कूलों के मामले में स्थिति बिल्कुल उलट है। इस दस साल की अवधि में निजी स्कूलों की संख्या 28 लाख से बढ़कर 33 लाख हो गई है। पूरी शिक्षा व्यवस्था के सामने एक बड़ी चुनौती है। अगर हालात ऐसे ही बने रहे तो 'गुजरात पढ़ो, गुजराती भाषा पढ़ो, गुजराती भाषा में लिखो' का नारा सिर्फ कागजों पर ही रह जाएगा। असल में इसका क्रियान्वयन कैसे होगा?

श्री अमित शाह के 'हरियाली लोकसभा' प्रोजेक्ट के तहत बड़े पैमाने पर स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाए जाएंगे

▸▸ विभिन्न प्रजातियों के पशु-पक्षियों, तितलियों और कीटों को आकर्षित करने वाले स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाने से गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में 'बसंत' वापस आएगा

▸▸ केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा उनके गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में इस वर्ष सवा करोड़ (1.25 crore) से अधिक वृक्ष-पौधे लगाने के लिए अभियान शुरू किया गया है और गांधीनगर को देश का एक मॉडल लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र बनाने का संकल्प किया गया है।

▸▸ जलवायु परिवर्तन के कारण समग्र दुनिया प्रभावित हुई है। इस परिवर्तन से लड़ने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने पेड़ लगाने का देश का सबसे बड़ा अभियान शुरू किया है।

▸▸ गांधीनगर हरियाली लोकसभा प्रोजेक्ट के हिस्से के रूप में गुजरात वन विभाग की 82 साइटों पर लगाए जा रहे लगभग 60 लाख पौधों में से 6.05 लाख से अधिक पौधे 24 दुर्लभ, संकटग्रस्त और विलुप्तप्राय देसी प्रजातियों के हैं।

गांधीनगर, 11 जुलाई : कुछ दिन पहले यदि आप बगोदरा से नल सरोवर की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित कणोतर गाँव की 35 हेक्टेयर गौचर भूमि के बगल से गुजरे होते, तो बहुत कम लोगों को वहाँ रहने का मन होता, क्योंकि बहुत ही क्षारयुक्त तथा जंगली बबूल से घिरी हुई यह भूमि उजाड़ जैसी थी। हालाँकि आज इस स्थल से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति बिना रुके नहीं रह सकता।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के महत्वाकांक्षी 'गांधीनगर हरियाली लोकसभा' अभियान अंतर्गत गुजरात वन विभाग ने इस 25 हेक्टेयर भूमि का कायाकल्प कर दिया है। जंगली बबूल हटाकर, पथरीली और कठोर मिट्टी की गहरी जुताई की गई है और उसके बाद क्षारयुक्त भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए जिप्सम, गोबर की खाद, आवश्यक पोषक तत्व और उर्वरक डालकर भूमि सुधार का कार्य किया गया। अब इस नवसाध्य भूमि में 2.30 लाख पेड़-पौधे लगाने का कार्य शुरू किया गया है। इनमें मुख्य रूप से स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधों का रोपण किया जाएगा।

इस 35 हेक्टेयर गौचर भूमि को चारों ओर से फेंसिंग कर सुरक्षित किया गया है। वृक्षों को पानी उपलब्ध कराने के लिए एक बोरवेल बनाया गया है और बिजली आपूर्ति के लिए एक सोलर प्लांट स्थापित किया गया है।

यह दृश्य केवल कणोतर गाँव तक

सीमित नहीं है, बल्कि श्री अमित शाह के गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में आने वाले अहमदाबाद तथा गांधीनगर जिलों के 82 स्थानों पर यह कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। पूरी तरह वीरान और खारी भूमि का पुनर्जीवन कर वहाँ स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाए जा रहे हैं और नया इकोसिस्टम विकसित किया जा रहा है।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के 'गांधीनगर हरियाली लोकसभा प्रोजेक्ट' के तहत इस वर्ष सवा करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य में वन विभाग अहमदाबाद और गांधीनगर जिलों के 82 स्थानों पर 540.92 हेक्टेयर क्षेत्र में 60 लाख पेड़-पौधे लगाएगा।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने एक व्यापक वृक्षारोपण अभियान द्वारा अपने गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र को देश के सबसे हरियाले लोकसभा क्षेत्रों में परिवर्तित करने के उद्देश्य से एक महत्वाकांक्षी पहल की है। जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध इस अभियान के अंतर्गत इस वर्ष समग्र गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में एक करोड़ से अधिक पौधे लगाए जाएंगे।

बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान में स्थानीय प्रजातियों पर अधिक बल

गांधीनगर हरियाली लोकसभा प्रोजेक्ट में स्थानीय तथा विलुप्त होती वनस्पतियों की प्रजातियों के रोपण पर विशेष बल दिया गया है।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव ने कहा, "इस अभियान अंतर्गत तेजी

से बढ़ने वाले वृक्षों के बजाय हमने अहमदाबाद एवं गांधीनगर जिलों की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप वृक्षों का चयन किया है। वन विभाग द्वारा कुल 121 वनस्पति प्रजातियों का रोपण किया जाएगा, जिनमें लगभग 80 प्रजातियाँ स्थानीय होंगी। इतना ही नहीं; लगाए जाने वाले 60 लाख पौधों में से 6.05 लाख से अधिक पौधे 24 दुर्लभ, संकटग्रस्त और विलुप्तप्राय देसी प्रजातियों के हैं।"

स्थानीय वनस्पति प्रजातियों में कुमकुम (Mallotus spp.), शिमली, कंपीलो, कीलाई, चमुली, जंगली सहजन, सफेद सिरिश, जंगली जामफल, कचनार, पीला केसूड़ा / टेसू, रीठा, सफेद साग तथा सफेद गंभार आदि शामिल हैं।

वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव ने कहा, "देसी वृक्षों की बुवाई वन्यजीवों की विविधता को समर्थन देने वाले प्राकृतिक आवासों को पुनर्स्थापित कर इकोसिस्टम को पुनः विकसित करने में मदद करती है। देसी वृक्ष स्थानीय पक्षियों, सरीसृपों, तितलियों, मधुमक्खियों तथा अन्य पॉलीनेटरों को भोजन, आश्रय और प्रजनन के लिए उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराते हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "स्थानीय वनस्पतियों के फूल, फल और पत्तियाँ पूरे वर्ष कीटों व पक्षियों को पोषण देते हैं, जबकि घनी वनस्पति छोटे जीवों के लिए सुरक्षित मार्ग बनाती है। नवसाध्य भूमि, नमी बनाए रखने की क्षमता तथा जैव विविधता इन आवासों को और अधिक सशक्त बनाती है, जिससे वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अधिक मजबूती से सामना कर सकते हैं।"

जैसे-जैसे ये पौधे बड़े होंगे, वैसे-वैसे वे स्थानीय स्तर पर संतुलन को पुनर्जीवित करेंगे, परागण को बढ़ाएंगे और एक समृद्ध तथा आत्मनिर्भर इकोसिस्टम बनाएंगे।

महात्मा गांधी श्रम संस्थान, अहमदाबाद द्वारा पिछले तीन वर्षों में 7 हजार से अधिक प्रशिक्षुओं को किया गया प्रशिक्षित

▸▸ संगठित-असंगठित श्रमिकों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं व्यवसायोन्मुखी पाठ्यक्रमों द्वारा राज्य के श्रम क्षेत्र को मिल रहा है मजबूत आधार

▸▸ संस्थान में वातानुकूलित ऑडिटोरियम, सेमिनार हॉल, स्मार्ट क्लासरूम, गेस्ट हाउस, ओपन एयर थिएटर, ग्रंथालय सहित अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध

गांधीनगर : राज्य में श्रमिक प्रशिक्षण और श्रम विषयक अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत महात्मा गांधी श्रम संस्थान (एमजीएलआई) द्वारा पिछले तीन वर्षों के दौरान कुल 123 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य के विभिन्न सरकारी विभागों, सार्वजनिक एवं निजी उद्योगों, श्रमिक संगठनों तथा अन्य संस्थाओं के 7,211 से अधिक प्रशिक्षु सहभागी हुए। श्रम कानूनों से लेकर औद्योगिक संबंध, कार्यस्थल सुरक्षा, औद्योगिक सुरक्षा, मानव संसाधन तथा पर्यावरण प्रबंधन जैसे विषयों पर आयोजित ये प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य में श्रमिकों की क्षमता वृद्धि और कौशल विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।.

अहमदाबाद के गुरुकुल क्षेत्र में हरित एवं विशाल परिसर में स्थित महात्मा गांधी श्रम संस्थान 15 सितंबर, 1979 से राज्य सरकार के श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के मार्गदर्शन में एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्यरत है। संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, कर्मचारियों, अधिकारियों तथा अन्य हितधारकों को श्रम विषयक प्रशिक्षण प्रदान करना, श्रम संबंधी अनुसंधान करना तथा व्यवसायोन्मुखी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का संचालन करना संस्थान के प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं।

संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष 40 से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया

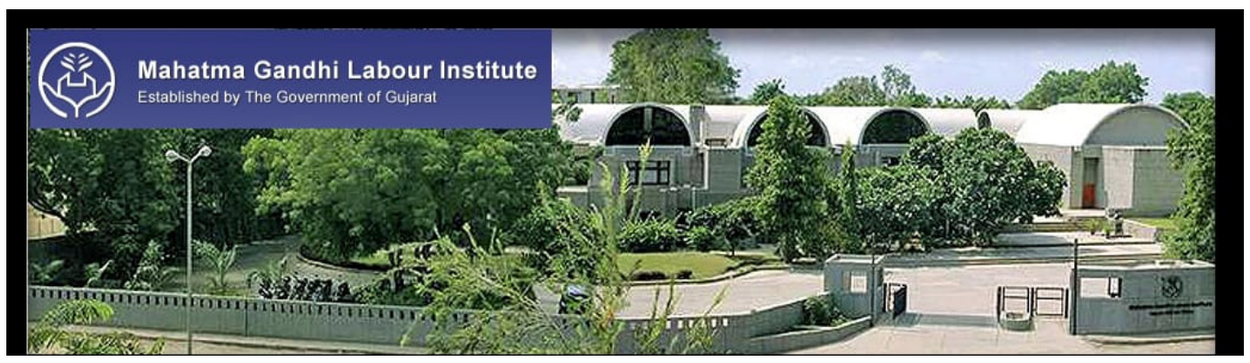

जाता है। इनमें श्रम कानून, औद्योगिक संबंध, सामाजिक संवाद, श्रमिक कल्याण, कार्यस्थल सुरक्षा, औद्योगिक सुरक्षा, श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता तथा बदलते श्रम कानूनों जैसे विषय शामिल हैं। इसके अतिरिक्त; विभिन्न सरकारी विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों, निजी उद्योगों तथा श्रमिक संगठनों की आवश्यकताओं के अनुरूप विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण के अतिरिक्त संस्थान द्वारा श्रम एवं श्रमिक कल्याण से संबंधित विभिन्न अनुसंधान अध्ययन भी किए जाते हैं, जिनके निष्कर्ष राज्य सरकार के लिए नीति निर्माण और निर्णय प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध होते हैं। राज्य में सौहार्दपूर्ण औद्योगिक संबंध बनाए रखने के उद्देश्य से त्रिपक्षीय सम्मेलन, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद, कार्यशालाओं तथा विशेष चर्चा सत्रों का भी आयोजन किया जाता है।

महात्मा गांधी श्रम संस्थान के भवन का डिजाइन देश के प्रसिद्ध वास्तुकार श्री बालकृष्ण विट्ठलदास (बी. वी.) दोषी द्वारा तैयार किया गया है। इसकी स्थापत्य कला और कार्यात्मक योजना इसे विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। लगभग 12 हजार वर्ग मीटर के परिसर में स्थित इस संस्थान में 170 सीटों की क्षमता वाला आधुनिक वातानुकूलित ऑडिटोरियम, 80 सीटों की क्षमता वाला सेमिनार हॉल, स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर प्रयोगशाला, गेस्ट हाउस, ओपन एयर थिएटर तथा 22 हजार से अधिक पुस्तकों से युक्त समृद्ध ग्रंथालय जैसी अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

संस्थान पिछले दो दशकों से विभिन्न स्नातकोत्तर एवं व्यवसायोन्मुखी पाठ्यक्रमों का भी सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। इनमें एमए (एचआर एंड लेबर रिलेशंस), एमए (मनोविज्ञान), पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन लेबर लॉ एंड प्रैक्टिस, पोस्ट डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल सेफ्टी, पोस्ट डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल एनवायरनमेंटल टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, एडवांस डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल रिलेशंस एंड लेबर कोड्स तथा विभिन्न प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शामिल हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से युवाओं और कार्यरत पेशेवरों को श्रम एवं औद्योगिक क्षेत्र में विशेष ज्ञान तथा व्यवसायोन्मुखी कौशल प्राप्त करने का अवसर मिलता है। श्रम क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से संस्थान ने हाल ही में दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक विकास एवं शिक्षा केंद्र तथा इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन (आईएलओ) के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सहयोग के परिणामस्वरूप अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम तथा ज्ञान के आदान-प्रदान को नई दिशा मिली है।

श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री श्री कंवरजीभाई बावळिया तथा राज्य मंत्री श्री कांतिभाई अमृतिया के नेतृत्व में महात्मा गांधी श्रम संस्थान राज्य में श्रमिक प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा कौशल विकास के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। आधुनिक सुविधाओं, अनुभवी विशेषज्ञों तथा गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण व्यवस्था के आधार पर संस्थान आज राज्य के श्रम क्षेत्र की अग्रणी एवं विश्वसनीय संस्था के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जेतलसर जंक्शन स्टेशन पर आधुनिक एकीकृत यात्री सूचना प्रणाली (IPIS) का सफल कमीशनिंग

यात्रियों को मिलेगी रियल टाइम रेल सूचना, सूचना प्रबंधन होगा अधिक स्मार्ट एवं प्रभावी

यात्रियों को अधिक सटीक, त्वरित एवं विश्वसनीय रेल सूचना उपलब्ध कराने की दिशा में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल दूरसंचार एवं सिग्नल इंजीनियर (Sr. DSTE) श्री एच. एस. आर्या के नेतृत्व एवं देखरेख में जेतलसर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर अत्याधुनिक इंटीग्रेटेड पैसेंजर इंफॉर्मेशन सिस्टम (Integrated Passenger Information System – IPIS) का सफलतापूर्वक कमीशनिंग कर इसे यात्रियों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि यह आधुनिक प्रणाली स्टेशन पर उपलब्ध विभिन्न यात्री सूचना प्रणालियों को एकीकृत करते हुए ट्रेनों के आगमन एवं प्रस्थान, प्लेटफॉर्म संख्या, कोच पोजीशन तथा अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां वास्तविक समय (Real Time) में प्रदर्शित करेगी। इसके माध्यम से सूचना प्रसारण अधिक तेज, सटीक एवं प्रभावी होगा, जिससे यात्रियों की यात्रा और अधिक सुगम एवं सुविधाजनक बनेगी।

उन्होंने बताया कि स्थापित IPIS प्रणाली के अंतर्गत स्टेशन पर विभिन्न आधुनिक सूचना उपकरण लगाए गए हैं। कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से ट्रेन संख्या, कोच पोजीशन, प्लेटफॉर्म संख्या, स्टेशन कोड एवं रेलवे जोन की

जानकारी प्रदर्शित होगी। स्टेशन लार्ज डिस्प्ले बोर्ड (SLDB) पर ट्रेन का नाम, ट्रेन संख्या, आगमन एवं प्रस्थान समय तथा प्लेटफॉर्म संख्या प्रदर्शित होगी। वहीं एट ए ग्लांस डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से इंजन के सापेक्ष कोचों की स्थिति, ट्रेन संख्या, आगमन एवं प्रस्थान समय तथा प्लेटफॉर्म संबंधी जानकारी उपलब्ध रहेगी।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक पब्लिक एड्रेस (PA) सिस्टम के माध्यम से ट्रेनों से संबंधित सूचनाओं एवं उद्घोषणाओं का प्रसारण स्वचालित तथा आवश्यकता अनुसार मैनुअल दोनों माध्यमों से किया जाएगा, जिससे यात्रियों तक समय पर सही एवं स्पष्ट सूचना पहुंच सकेगी। नई IPIS प्रणाली के लागू होने से स्टेशन की सूचना प्रदर्शन एवं उद्घोषणा व्यवस्था आधुनिक तकनीक से सुसज्जित हो गई है। इससे सूचना प्रबंधन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होगा तथा यात्रियों को समय पर सटीक जानकारी उपलब्ध होने से उनकी यात्रा अधिक सुविधाजनक और निर्बाध बनेगी।

जेतलसर जंक्शन स्टेशन पर IPIS प्रणाली का सफल कमीशनिंग 08 जुलाई को संपन्न किया गया। यह परियोजना पश्चिम रेलवे द्वारा यात्री सुविधाओं के आधुनिकीकरण, डिजिटल रेलवे की अवधारणा को साकार करने तथा स्मार्ट स्टेशन विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक, आधुनिक एवं विश्वस्तरीय रेल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर नई तकनीकों को अपनाने तथा यात्री सुविधाओं के विस्तार के प्रति प्रतिबद्ध है।

भावनगर मंडल को मिली बड़ी उपलब्धि : धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन (TSS) का 2×25 केवी प्रणाली पर सफल बैक चार्ज

यात्रियों को सुरक्षित, विश्वसनीय एवं उच्च क्षमता वाली रेल सेवाएं उपलब्ध कराने तथा आधुनिक रेल विद्युतीकरण अवसंरचना को और अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (ट्रैक्शन) श्री विजेन्द्र कुमार मीणा के नेतृत्व एवं देखरेख में दिनांक 09 जुलाई को धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन (TSS) का 2×25 केवी ट्रैक्शन प्रणाली के अंतर्गत सफलतापूर्वक बैक चार्ज किया गया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन का सफल बैक चार्ज बोटाद–गांधीग्राम रेलखंड पर 2×25 केवी ट्रैक्शन प्रणाली के अंतर्गत ओवरहेड उपकरण (OHE) को चार्ज करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक उपलब्धि है। इससे इस रेलखंड पर आधुनिक ट्रैक्शन प्रणाली के क्रियान्वयन को नई गति मिलेगी तथा भविष्य में रेल परिचालन अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय, ऊर्जा दक्ष एवं कुशल बनाया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि 2×25 केवी ट्रैक्शन प्रणाली पारंपरिक रेल विद्युतीकरण प्रणाली की तुलना में अधिक क्षमता, बेहतर वोल्टेज विनियमन तथा लंबी दूरी तक निर्बाध एवं विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करती है। इसके माध्यम से भारी एवं तीव्र गति वाली ट्रेनों का संचालन अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकेगा। साथ ही ऊर्जा की बचत, लाइन लॉस में कमी तथा रखरखाव संबंधी आवश्यकताओं में भी उल्लेखनीय कमी आएगी, जिससे रेल परिचालन की समग्र दक्षता में वृद्धि होगी।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने विद्युत विभाग तथा परियोजना से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन का सफल बैक चार्ज भावनगर मंडल में आधुनिक रेल अवसंरचना के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि परियोजना के पूर्ण होने के पश्चात बोटाद–गांधीग्राम रेलखंड पर रेल परिचालन और अधिक विश्वसनीय, सुरक्षित, तीव्र एवं प्रभावी होगा तथा यात्रियों को बेहतर सेवाओं का लाभ मिलेगा। पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल भारतीय रेल के आधुनिकीकरण, ऊर्जा दक्षता, पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के उपयोग तथा विश्वस्तरीय रेल अवसंरचना के विकास के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन का सफल बैक चार्ज इसी प्रतिबद्धता का एक सशक्त उदाहरण है, जो भविष्य में क्षेत्र के रेल परिचालन को नई गति प्रदान करने के साथ-साथ यात्रियों को अधिक सुरक्षित, निर्बाध एवं गुणवत्तापूर्ण रेल सेवाएं उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

घाट में बाढ़ के मुद्दे पर जनहित याचिका दायर करने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई, सूरत अधिकारियों की लापरवाही के कारण पीड़ित है: छगनलाल मेवाड़ा

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। 2006 में तत्कालीन जल आपूर्ति मंत्री नरोत्तम पटेल के निर्देशों के बाद शुरू हुई बाढ़ की आपदा आज तक जारी है। इसके बावजूद, लोग अब शासकों की आलोचना कर रहे हैं और उनके खिलाफ नारे लगा रहे हैं। लेकिन चूंकि लोग चुनावों में बड़ी संख्या में भाजपा को वोट देते हैं, इसलिए शासक अक्षम और गैर-जिम्मेदार हो गए हैं और बाढ़ की समस्या बनी हुई है। इस समस्या को देखते हुए, नागरिकों के हितों के लिए लड़ने वाले सामाजिक सेवा संगठन विकास ग्राहक सुरक्षा और अनुसंधान केंद्र के दक्षिण गुजरात अध्यक्ष छगनलाल डी. मेवाड़ा ने 2016 में गुजरात उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी, जो दस साल बीत जाने के बावजूद आज भी गुजरात उच्च न्यायालय में लंबित है, क्योंकि अधिकारियों ने इस मामले में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है।

इस जनहित याचिका को दायर करने का मुख्य कारण यह है कि उकाई बांध का पानी सानिया हेमाद से कुम्भरिया, सरोली, दुनभल आदि से होकर बहने वाली खाड़ियों में जाता है। इन खाड़ियों पर बने अवैध बाजारों और बस्तियों को हटाने की जिम्मेदारी संबंधित ग्राम पंचायत और सूदा की है, लेकिन कुम्भरिया-सरोली ग्राम पंचायत और सूदा के नियंत्रण में आने वाली खाड़ियों में श्याम संगिनी टेक्सटाइल मार्केट और सारथी रेसिडेंस कुम्भरिया खाड़ी पर बने हुए हैं। कंकरापारा और सानियागाम से आने वाली सारथी नदी से कुम्भरिया के मोड़ पर दबाव शुरू हो गया है, जहां मीठी और कोयली खाड़ियों के दोनों किनारों पर बिल्डरों और अन्य लोगों द्वारा अवैध रूप से दुकानें, मकान और घर बनाए गए हैं। अवैध रूप से निर्मित भूमि बाजार के दूसरी ओर स्थित मागोब, पूर्व सांसद और पूर्व विधायक अमर सिंह जिन्ना की सरकारी जमीन पर सरकार द्वारा आवंटित जगह का इस्तेमाल करके एससी/एसटी और सिद्धार्थ गैस एजेंसी चलाई जा रही है। आदिवासियों ने आजीविका चलाने की मांग की थी, लेकिन उन्हें सरकार द्वारा आवंटित भूमि से चार गुना अधिक भूमि आवंटित की गई। उन्होंने उस पर पेट्रोल पंप बनाकर उसे बेच दिया। अब इसे 'अंबर हाउस' के नाम से जाना जाता है। यह देखकर दुख होता है कि कोयली नाले पर बढ़ते दबाव के कारण अन्य लोगों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। दो दशक बीत चुके हैं। सबसे पहले तो जिम्मेदार कलेक्टर की जिम्मेदारी आती है। पिछले कलेक्टर से लेकर अब तक सेवा दे चुके कलेक्टर तक, यह जिम्मेदारी उन्हीं की है। अगर नाले का निरीक्षण किया गया होता, तो आज यह स्थिति नहीं होती। सूरत नगर निगम में शामिल होने से नगर का विस्तार हुआ है, और इसमें शामिल गांवों के विकास की जिम्मेदारी सूरत नगर निगम की है। उस जोन के कमिश्नर और उनके अधीन कार्यरत अधिकारियों, विशेषकर लिंबायत जोन के अधिकारियों की जिम्मेदारी न निभाने, भ्रष्ट अधिकारियों, रिश्वतखोर अधिकारी, बिल्डरों की गोद में बैठे निलंबित जोन प्रमुख विपुल गणेशवाला की वजह से 45 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। मौजूदा अधिकारियों की लापरवाही के कारण छोटे-बड़े व्यापारियों को लाखों-करोड़ों का नुकसान हुआ है। यह सब इन्हीं अधिकारियों की लापरवाही के कारण हुआ है। स्थानीय पार्षदों को सारी जानकारी होने के बावजूद, यह जानते हुए भी कि किसने कहाँ और कितना दबाव डाला है, भ्रष्टाचार हुआ है। जिसके कारण नुकसान हुआ है और निर्दोष जनता को भुगतना पड़ रहा है। जनता को जागरूक होना चाहिए और स्थानीय पार्षद खाली फोटो सेशन के लिए सस्ती शोहरत पाने के चक्कर में इधर-उधर भटक रहे हैं। माताओं, बहनों, भाइयों, युवाओं को उन्हें चेतावनी देनी चाहिए। क्योंकि असली संकट के समय, अगर उनके हाथ भ्रष्टाचार से सने हों, तो वे जनता के लिए क्या भला कर सकते हैं? सूरत शहर के हमेशा सतर्क रहने वाले संगठन, विकास ग्राहक सुरक्षा एवं अनुसंधान केंद्र, दक्षिण गुजरात के अध्यक्ष छगनलाल डी. मेवाड़ा ने वर्ष 2006 में स्थिति और मानसून के दौरान नदी के किनारे बसे नागरिकों के घरों और सामानों को हुए नुकसान को देखते हुए जनहित में वर्ष 2016 में गुजरात उच्च न्यायालय में जनहित याचिका संख्या 51/2016, 50/2016 और 34907/2022 दायर की। उस समय, गुजरात उच्च न्यायालय ने सूडान और एमएनपी के अधिकारियों और गुजरात सरकार के अधिकारियों को मौके पर निरीक्षण करने और अपनी रिपोर्ट माननीय गुजरात उच्च न्यायालय को प्रस्तुत करने के लिए नोटिस जारी किया था।लेकिन शराब के नशे में चूर अधिकारियों ने उच्च न्यायालय का अपमान किया और मनमानी की, जिसके चलते गुजरात उच्च न्यायालय के आदेश का आज तक पालन नहीं किया गया है। इसी वजह से आज तक लोग बाढ़ से पीड़ित हैं और सूरत शहर के लोग भारी परेशानी झेल रहे हैं। इसके मूल में सूरत नगर निगम, सुदा, कलेक्टर समेत सभी जिम्मेदार अधिकारियों की घोर लापरवाही का पाप है, जिन्होंने अपने कंधे बदल लिए हैं और गैंडे की खाल ओढ़ ली है।